04 - ब्रजमंडल : बाहरी यात्रा से अंतर्मन की परिक्रमा तक

05 - लोक कला, कला और अनंत लोक की यात्रा

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 25 जनवरी, 2026

06 - मां नर्मदा की सेवा में समर्पित एक सच्चे साधक- पर्यावरणविद्...

07 - संविधान, लोकतंत्र, राष्ट्र प्रेम और हिंदी सिनेमा

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 145, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

फाइनल रिहर्सल

उत्साह और उमंग से भरपूर रही गणतंत्र दिवस परेड की फुल ड्रेस फाइनल रिहर्सल..: फोटो प्रवीण वाजपेई

वृद्धजनों की सेवा और ओल्ड एज होम की स्थापना के लिए सरकार ने समाज को साथ जोड़ा : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अंतर्गत 54.52 लाख पेंशन हितग्राहियों को 327.15 करोड़ से अधिक राशि अंतरित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश-प्रदेश में विकास का अर्थ केवल अधोसंरचना निर्माण नहीं है, विकसित राष्ट्र के लिए, समाज के सभी वर्गों को बेहतर और सुरक्षित जीवन जीने के अवसर उपलब्ध कराना भी विकास है और यह राज्य सरकार का सर्वोच्च दायित्व भी है। राज्य सरकार दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण और वृद्धजनों की सेवा के लिए संकल्पित है। राजधानी में वरिष्ठजनों को परिवार जैसा वातावरण देने के लिए सेवा भारती के माध्यम से इस सर्व-सुविधायुक्त सशुल्क वरिष्ठजन निवास की शुरुआत की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण के लिए हर कदम पर उनके साथ है। राज्य सरकार ने वृद्धजनों की सेवा और ओल्ड एज होम की स्थापना के लिए समाज को साथ जोड़ा है। राज्य सरकार दिव्यांगजन को भी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहित कर उनमें क्षमताएं विकसित करने का प्रयास कर रही है। दिव्यांगजनों के पास अद्भुत बौद्धिक क्षमता होती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव नव निर्मित सशुल्क वृद्धाश्रम संध्या छाया के लोकार्पण अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा पत्रकार कॉलोनी लिंक रोड नं. 3 पर निर्मित सर्व सुविधायुक्त वृद्धाश्रम में आयोजित कार्यक्रम का मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पीपीपी मोड पर बने संध्या छाया ओल्ड एज होम का शुभारंभ कर अवलोकन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां रह रहे एक दम्पत्ति का अभिवादन कर स्वागत भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्यस्तरीय दिव्यांगजन स्पर्श मेला-2026 में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए कलाकारों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने कलाकारों से संवाद कर उन्हें प्रोत्साहित भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में 54.52 लाख से अधिक पेंशन हितग्राहियों को 327.15 करोड़ रूपये से अधिक राशि का सिंगल क्लिक से अंतरण किया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 25 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अमेरिकी टैरिफ से कपड़ा कारोबार को भारी नुकसान

● राहुल बोले-4.5 करोड़ नौकरियां दांव पर, मोदी जवाबदार

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को हरियाणा की एक कपड़ा फैक्ट्री का वीडियो अपने एक्स अकाउंट पर शेयर किया। राहुल ने हाल ही में फैक्ट्री का दौरा किया था। राहुल मजदूरों और अफसरों से बातचीत करते हैं। कपड़ा काटने में खुद भी हाथ आजमाते नजर आते हैं। राहुल ने पोस्ट में लिखा- अमेरिकी टैरिफ से देश के कपड़ा एक्सपोर्टर्स को भारी नुकसान हुआ है। 4.5 करोड़ से ज्यादा नौकरियां और लाखों कारोबार दांव पर हैं, लेकिन मोदी ने न तो कोई राहत दी है और न ही अमेरिकी टैरिफ पर कुछ कहा।

मोदी जी, आप जवाबदेह हैं। कृपया इस मुद्दे पर ध्यान दें। राहुल ने लिखा कि अमेरिका में 50 फीसदी टैरिफ और अनिश्चितता भारत कपड़ा एक्सपोर्टर्स को बुरी तरह नुकसान पहुंचा रही है। नौकरियां जा रही हैं, फैक्ट्रियां बंद हो रही हैं और ऑर्डर कम हो रहे हैं। यह हमारी 'डेड इकॉनोमी' की सच्चाई है। राहुल कहा कि भारत के लिए यह बेहद जरूरी है कि अमेरिका के साथ ऐसा व्यापार समझौता किया जाए, जिसमें भारतीय कारोबार और मजदूरों के हित सबसे ऊपर रहें। उन्होंने यह भी कहा कि पीएम मोदी को अपनी कमजोरी का असर इकॉनमी पर और नहीं पड़ने देना चाहिए।

मुझे जो कुछ कहना है पार्टी के अंदर कहूंगा

● राहुल गांधी से नाराजगी के दावों के बीच थरूर की दो टूक

तिरुवंनतपुरम/कोझिकोड (एजेंसी)। कांग्रेस के दिग्गज नेता शशि थरूर का राज्य प्रदेश कांग्रेस समिति की बैठक से गायब रहने पर केरल से दिल्ली तक हड़कंप मचा हुआ है। दावा किया जा रहा है कि शशि थरूर कोच्चि में राहुल गांधी के कार्यक्रम में प्रोटोकाल का पालन नहीं होने से नाराज हैं। इसीलिए वह पार्टी की एक अहम बैठक में नहीं गए थे। इससे राज्य के कार्यकर्ताओं में कांग्रेस की एकता को लेकर संदेह खड़ा हो रहा है। इस सब के बीच कोझिकोड पहुंचे शशि थरूर ने केंद्रीय नेतृत्व के साथ विवाद पर बोलने और कुछ कहने से मना कर दिया। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि

चिंताओं को सीधे पार्टी लीडरशिप तक पहुंचाना बेहतर है। मीडिया में कई बातें सामने आई हैं, जिनमें से कुछ सच हो सकती हैं और कुछ नहीं। थरूर ने कहा कि और ऐसे मामलों पर पब्लिक प्लेटफॉर्म पर चर्चा नहीं होनी चाहिए। मैंने पार्टी को पहले ही बता दिया था कि मैं प्रोग्राम में शामिल नहीं होऊंगा और मुझे जो कुछ भी कहना है, वह पार्टी के अंदर ही कहूंगा। उन्होंने यह भी कहा कि एर्नाकुलम विवाद के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं इस इवेंट में किताब लॉन्च करना चाहता था, लेकिन राजनीतिक कामों की वजह से जयपुर लिटरेचर फेस्टीवल में बुक लॉन्च टालना पड़ा। यही वजह है कि मैंने कोझिकोड में इस इवेंट में शामिल होने का फैसला किया। शशि थरूर का यह बयान ऐसे वक्त पर आया है जब यह जानकारी सामने आई है कि उन्हें कांग्रेस नेतृत्व ने मनाने की कोशिश की है।

एक और छलांग लगाने की तैयारी में अपना इसरो !

अंतरिक्ष में बनाएगा अपना स्पेस स्टेशन, शुरू किया काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन अंतरिक्ष विज्ञान की दुनिया में एक और छलांग लगाने की तैयार कर रहा है। स्पेस एजेंसी ने अपनी अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन की नींव रख दी है। भारतीय उद्योग जगत को साथ आने का न्योता दिया है। यह कदम भारत को उन चुनिंदा देशों की कतार में खड़ा कर देगा जिनके पास अंतरिक्ष में अपना स्थायी ठिकाना (स्टेशन) है। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र ने भारतीय कंपनियों के लिए एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट जारी किया है। इसके जरिए निजी क्षेत्र की कंपनियों को अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल, ईआर-01 के निर्माण के लिए आमंत्रित किया गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, पहले चरण की शुरुआत 2028

में होगी। इसमें अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल (ईआर-01) को लॉन्च करने का लक्ष्य रखा गया है।

2035 तक इसे पूर्ण कर लिया जाएगा। सभी 5 मॉड्यूल्स के साथ स्टेशन पूरी तरह तैयार हो जाएगा। यह पृथ्वी की निचली कक्षा में लगभग 400-450 किमी की ऊंचाई पर स्थापित होगा। शुरुआत में यह 3-4 अंतरिक्ष यात्रियों को ठहराने और वहां वैज्ञानिक प्रयोग करने में सक्षम होगा। इसरो ने भारतीय कंपनियों के लिए कड़े मानक तय किए हैं, क्योंकि यह मॉड्यूल इंसानों के रहने योग्य होगा। प्रत्येक मॉड्यूल 3.8 मीटर व्यास और 8 मीटर ऊंचा होगा। इसका निर्माण उच्च शक्ति वाले एल्युमिनियम मिश्र धातु (ए-2219) से किया जाएगा। निर्माण में 0.5 मिलीमीटर की भी गलती स्वीकार्य नहीं होगी। कंपनियों को विशेष वेल्डिंग और फैब्रिकेशन तकनीक विकसित करनी होगी। इसरो ने स्पष्ट किया है कि यह पूरी तरह भारतीय प्रयास होगा। इसमें किसी भी विदेशी सहायता या आउटसोर्सिंग की अनुमति नहीं होगी। जो कंपनियां इस ऐतिहासिक प्रोजेक्ट का हिस्सा बनना चाहती हैं उनके लिए कुछ शर्तें रखी गई हैं।

पीएम मोदी ने बांटे 61 हजार जॉब लेटर

● कहा-युवाओं को नए अवसर मिलें, ये हमारा प्रयास ● मोदी बोले-आज कई स्टार्टअप में महिला डायरेक्टर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने शनिवार को वर्चुअली 18वें रोजगार मेले में युवाओं को 61 हजार जॉब लेटर बांटे। ये नियुक्ति गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग सहित अन्य विभागों में की गई है। रोजगार मेले का आयोजन देश के 45 जगहों पर किया जा रहा है। पीएम ने वर्चुअली संबोधन में कहा कि युवाओं को नए अवसर मिलें, ये हमारा प्रयास है। देशभर के स्टार्टअप में महिलाएं आगे हैं। कई स्टार्टअप में तो वे हेड हैं। महिला स्वरोजगार की दर में 15 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। पिछला रोजगार मेला 24 अक्टूबर 2025 को आयोजित किया गया था। प्रधानमंत्री ने 22 अक्टूबर 2022 को रोजगार मेले का पहला फेज शुरू किया था। अब तक 11 लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिल चुका है।

भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का दायरा बढ़ा

सरकारी भर्तियों को भी कैसे मिशन मोड पर किया जाए इसलिए रोजगार मेले की शुरुआत की गई। रोजगार मेला एक इंस्टीट्यूशन बन गया है। भारत की युवा शक्ति के लिए नए अवसर बने ये हमारा प्रयास है। हम कई ट्रेड एग्रीमेंट कर रहे हैं। इससे अनेकों अवसर आने वाले हैं। भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का दायरा बढ़ रहा है। देश में दो लाख रजिस्टर्ड स्टार्टअप में 21 लाख युवा काम कर रहे हैं। भारत की इकोनॉमी तेजी से बढ़ रही है। आज भारत पर जिस तरह दुनिया का भरोसा बढ़ रहा है इससे अनेकों संभावनाएं पैदा हो रही हैं। 2025 में टू व्हीलर की बिक्री दो करोड़ के पार पहुंच गई। आयकर और जीएसटी कम होने से लाभ हुआ। देश में बड़ी संख्या में रोजगार का अवसर पैदा हो रहा है। आज 8000 से ज्यादा बेटियों को नियुक्ति पत्र मिले। महिला स्वरोजगार की दर में 15 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। आज कई स्टार्टअप में महिला डायरेक्टर हैं। गावों के कई रोजगार में महिलाएं हेड कर रही हैं। आपको एक और बात याद रखनी है। तेजी से बदले टेक के इस दौर में देश की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। आपको खुद को लगातार अपग्रेड करना है। आईगॉट ऐप का उपयोग करें।

पंजाब में गणतंत्र दिवस से पहले हुआ बड़ा धमाका

● सरहिंद में रेलवे की आउटर लाइन पर ब्लास्ट, सुरक्षा अधिकारी घायल

चंडीगढ़ (एजेंसी)। गणतंत्र दिवस से पहले पंजाब में रेल लाइन पर धमाका हुआ है। शुक्रवार रात करीब नौ बजे सरहिंद रेलवे स्टेशन की एक आउटर लाइन पर इंजन के गुजरने के दौरान धमाका हुआ। देर रात करीब 11 बजे इसकी सूचना राजकीय रेलवे पुलिस को दी गई। हमले में एक लोको पायलट के घायल होने की भी सूचना है। जीआरपी ने इस संदर्भ में अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

जांच के दौरान पुलिस पुलिस और एफएसएल की टीम ने मौके से कुछ सबूत जुटाए हैं ताकि फॉरेंसिक जांच के बाद यह मालूम किया जा सके कि यह धमाका किसी आतंकी साजिश का हिस्सा था या नहीं। रोपड़ रेंज के डीआईजी नानक सिंह भी मौके पर पहुंचे हैं।

भारत से एक्स्ट्रा 25 फीसदी टैरिफ हटा सकता है अमेरिका

● वित्तमंत्री बोले-भारत ने रूस से तेल खरीद घटाई, ये अमेरिका की बड़ी जीत

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने कहा है कि डोनाल्ड ट्रम्प सरकार भारत पर लगाए गए 50 फीसदी टैरिफ में से आधा टैरिफ हटाने पर विचार कर सकती है। उन्होंने गुरुवार को अमेरिकी मीडिया वेबसाइट पॉलिटिको को दिए इंटरव्यू में कहा कि भारत ने रूस से कच्चा तेल खरीदना काफी कम कर दिया है, इसलिए टैरिफ में राहत देने की गुंजाइश बन रही है। बेसेंट ने इसे अमेरिका की बड़ी जीत बताया और कहा कि भारत पर लगाया गया 25 फीसदी टैरिफ काफी असरदार रहा है और इसकी वजह से भारत की रूसी तेल खरीद घट गई है। उन्होंने कहा कि टैरिफ अभी भी लागू हैं, लेकिन अब इन्हें हटाने का रास्ता निकल सकता है। अमेरिका ने अगस्त 2025 में भारत पर दो बार टैरिफ लगाया था। पहली बार 1 अगस्त को व्यापार घाटे को लेकर 25 फीसदी टैरिफ लगाया गया। इसके बाद 27 अगस्त को रूस से तेल खरीदने की वजह से एक बार और 25 फीसदी टैरिफ लगाया गया।

यूरोप भारत से तेल खरीद कर रूस की मदद कर रहा

बेसेंट ने यह भी कहा कि यूरोपीय देश भारत पर टैरिफ इसलिए नहीं लगा रहे हैं क्योंकि वे भारत के साथ बड़ा व्यापार समझौता करना चाहते हैं। साथ ही उन्होंने यूरोप पर आरोप लगाया कि वह भारत से रिफाइंड तेल खरीदकर खुद ही रूस की मदद कर रहा है।

बिहार में अब नदियों से बालू-सीमेंट की ढुलाई !

● सड़क और रेल से 3 गुना सस्ता, रोजगार के अवसर भी होंगे ● परिवहन मंत्री ने की 7 राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास की घोषणा

पटना (एजेंसी)। बिहार में माल ढुलाई के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है। अब राज्य की सड़कों पर भारी ट्रकों का दबाव कम होगा क्योंकि गंगा, कोसी, गंडक और सोन जैसी प्रमुख नदियों का इस्तेमाल कमर्शियल रूट के तौर पर किया जाएगा। केरल के कोच्चि में हुए इनलैंड वाटरवेज डेवलपमेंट काउंसिल की बैठक में परिवहन मंत्री श्रवण कुमार ने बिहार के 7 राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास का रोडमैप पेश किया। उन्होंने बताया कि जलमार्ग न केवल सस्ता है, बल्कि

पर्यावरण के अनुकूल भी है। इस योजना के तहत नदियों के किनारे उद्योग और आधुनिक टर्मिनल विकसित किए जाएंगे, जो बिहार को सीधे वैश्विक व्यापार और पड़ोसी देश नेपाल से जोड़ेंगे। परिवहन मंत्री के अनुसार, जलमार्ग से माल ढुलाई की लागत मात्र 1.3 रुपये प्रति टन किलोमीटर है, जो सड़क मार्ग (3.62 रुपये) और रेल (2.41 रुपये) की तुलना में बेहद कम है। भारी सामग्री जैसे बालू, सीमेंट और स्टोन चिप्स की जहाज से ढुलाई होने पर 40 फीसदी तक बोझ कम हो जाएगा।

भारी जल संकट झेल रही दुनिया की आधी आबादी

● दिल्ली-मुंबई और बेंगलुरु में पानी की कमी, चेन्नई सूखे की कगार पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूनाइटेड नेशंस की नई रिपोर्ट में बताया गया कि दुनिया में आधी आबादी यानी करीब 4 अरब लोग जल संकट से जूझ रहे हैं। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि दुनिया के 100 सबसे बड़े शहरों में आधे शहरों को गंभीर पानी की कमी का सामना करना पड़ रहा है। इनमें दिल्ली, बीजिंग, न्यूयॉर्क और रियो जैसे बड़े शहर शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, 39 शहरों में स्थिति बेहद गंभीर है। रिपोर्ट में दिल्ली चौथे स्थान पर है। कोलकाता

9वें, मुंबई 12वें, बेंगलुरु 24वें और चेन्नई 29वें स्थान पर हैं। इसके अलावा हैदराबाद, अहमदाबाद, सूरत और पुणे भी लंबे समय से पानी की कमी झेल रहे हैं। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल पहला आधुनिक शहर बन सकता है जहां पानी पूरी तरह खत्म हो जाए। मैक्सिको सिटी हर साल करीब 20 इंच की दर से धंस रही है क्योंकि भूमिगत जल अधिक उपयोग किया जा रहा है। अमेरिका के दक्षिण-पश्चिमी राज्यों में पानी को लेकर विवाद चल रहा है।

शरद स्मृति व्याख्यान मानस भवन में 30 जनवरी को

भोपाल। अर्चना प्रकाशन न्यास भोपाल के तत्वावधान में 30 जनवरी शुक्रवार को श्यामला हिल्स स्थित मानस भवन में शरद स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. सह प्रचारक प्रमुख अरुण जैन मुख्य वक्ता होंगे। संघ के प्रांत चालक अशोक पांडेय कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। स्मृतिशेष शरद चंद मेहरोत्रा अर्चना प्रकाशन न्यास के संस्थापक हैं। उनकी पुण्यतिथि पर न्यास द्वारा यह आयोजन किया जा रहा है। न्यास के प्रबंध न्यासी राकेश जैन ने बताया कि इस अवसर पर तीन पुस्तकों तथा वार्षिक स्मारिका का लोकार्पण भी किया जाएगा। लेखक डॉ विकास दवे की पुस्तक भारत का जय घोष वंदे मातरम, लेखक लाजपत आहूजा की पुस्तक धर्म की ढाल गुरु तेगबहादुर तथा लेखक रमेश शर्मा की पुस्तक भगवान बिरसा मुंडा। वार्षिक स्मारिका शताब्दी के निहितार्थ के संपादक हैं प्रो उमेश कुमार सिंह। कार्यक्रम शाम पांच बजे शुरू होगा।

जय श्रीराम के उद्घोष से यूपी दिवस कार्यक्रम का आगाज

● अमित शाह पहुंचे प्रेरणा स्थल, मिशन 2027 का किया शंखनाद

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर यूपी महोत्सव का आयोजन हो रहा है। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में भाग लेने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह लखनऊ पहुंचे। यूपी दिवस समारोह का आयोजन 24-26 जनवरी तक हो रहा है। यूपी दिवस समारोह का उद्घाटन अमित शाह ने किया। इससे पहले एयरपोर्ट पर सीएम योगी आदित्यनाथ, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य एवं ब्रजेश पाठक और अन्य नेताओं ने केंद्रीय गृह मंत्री का

जोरदार स्वागत किया। इसके बाद अमित शाह राष्ट्र प्रेरणा स्थल पहुंचे। कार्यक्रम को लखनऊ में सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम किए गए। इस मौके पर अमित शाह ने एक जिला एक व्यंजन कार्यक्रम का भी शुभारंभ किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जय श्री राम का जयकारा लगाकर अपने संबोधन की शुरुआत की। भारत माता की जय के नारे भी लगे। इस दौरान आवाज हल्की होने पर गृह मंत्री ने चुटकी ली। उन्होंने कहा कि मौसम भी खुल गया है। ठंड कम हो गई है। आज यूपी दिवस का कार्यक्रम है। ऐसे में कमजोर आवाज से काम नहीं चलेगा। इसके बाद जय श्री राम के जयकारे से पूरा कार्यक्रम पंडाल गूंज उठा। इस मौके पर

केंद्रीय गृह मंत्री ने मोदी सरकार के विकसित भारत संकल्प का जिक्र किया। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि यूपी में भी योगीजी ने प्रदेश को विकसित बनाने का संकल्प लिया है। 15 अगस्त 2047 को जब देश की आजादी की 100वीं वर्षगांठ मनाई जाएगी, तब यूपी विकसित बनेगा। विकसित भारत का अहम राज्य उत्तर प्रदेश है। हम आज इस संकल्प दोहराते हैं।

यूपी भारत की धड़कन और आत्मा है। अब यह प्रदेश देश के विकास का इंजन भी बन रहा है। सीएम योगी ने यूपी दिवस के मौके पर पीएम के बधाई संदेश को पढ़ा। पीएम ने लिखा है कि आज उत्तर प्रदेश वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है।

लेखक एवं पत्रकार प्रमोद भार्गव को नासिक में मिला विद्योत्तमा सम्मान

शिवपुरी (नप्र)। शिवपुरी के वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार प्रमोद भार्गव को कहानी लेखन के क्षेत्र में 'विद्योत्तमा सम्मान' से नासिक महाराष्ट्र में अलंकृत किया गया।श्री भार्गव को उनका 2024 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'प्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियां' पर यह सम्मान साहित्य,समाज एवं सांस्कृतिक संस्था विद्योत्तमा प्रतिष्ठान द्वारा माहेश्वरी भवन में सम्पन्न हुए एक भव्य समारोह में दिया गया। यह सम्मान नासिक महाराष्ट्र की माहेश्वरी धर्मशाला में आयोजित होने वाले

एक भव्य समारोह में दिया जाएगा।इस अवसर पर दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह के संपादक प्रकाश दुबे अध्यक्ष, केंद्रीय संस्कृत, विश्वविद्यालय नासिक के निदेशक नीलाभ तिवारी मुख्य अतिथि,विशिष्ट अतिथि कर्मचारी राज्य बीमा निगम नासिक के संयुक्त निदेशक चंद्रशेखर पाटिल विशिष्ट अतिथि और कर्नल राजेश सक्सेना विशेष अतिथि की आसंदियों पर विराजमान थे। संस्थान के अध्यक्ष सुबोध कुमार मिश्र ने कार्यक्रम का संचालन किया। मिश्र ने प्रमोद भार्गव को सम्मान दिए जाने से पूर्व मंच से बताया कि प्रमोद भार्गव की विभिन्न प्रकाशन संस्थानों से अब तक 25 पुस्तकें छप चुकी हैं।भारत सरकार के राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से भी उनकी दो पुस्तकें छपी हैं। उनके दशावतार और आर्यावर्त उपन्यास बहुत चर्चित हुए हैं। आर्यावर्त उपन्यास आज तक के यूट्यूब चैनल साहित्य तक ने 2025 के 10 श्रेष्ठ उपन्यासों में शामिल किया है।यह चैनल इस उपन्यास पर दो बार चर्चा भी कर चुका है।दशावतार का इसी नाम से अंग्रेजी में अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है।उनकी पुरातन विज्ञान पुस्तक भी चर्चित पुस्तकों में दर्ज है।प्रमोद भार्गव को अब तक सरकारी एवं गैर सरकारी दो दर्जन से ज्यादा सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। इनमें मध्यप्रदेश सरकार की साहित्य अकादमी एवं जनसंपर्क विभाग के सम्मान शामिल हैं।उन्हें साहित्य के क्षेत्र में मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,हिंदी भवन भी नरेश मेहता वांग्मय सम्मान से विभूषित कर चुकी है।

मुख्यमंत्री ने भारत रत्न से सम्मानित स्व. कर्पूरी ठाकुर की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारत रत्न से सम्मानित सामाजिक समानता के प्रतीक, स्व. कर्पूरी ठाकुर की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्र निर्माण के साथ ही गरीबों और वंचितों के कल्याण के लिए स्व.कर्पूरी ठाकुर का त्याग व समर्पण हम सभी को समाज सेवा के मार्ग पर चलने के लिए सदैव प्रेरित करता रहेगा।

मुख्यमंत्री ने उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस की दीं बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्र निर्माण में उत्तर प्रदेश का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने कामना की कि गौरवशाली उत्तर प्रदेश 'विकास, समृद्धि और सुशासन' के पथ पर निरंतर अग्रसर रहे।

मध्यप्रदेश एसटीएफ की अवैध शस्त्रों के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई

5 अत्याधुनिक पिस्तौल जब्त, दो आरोपी गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) द्वारा अवैध शस्त्रों के विरुद्ध कार्यवाही कर बड़ी सफलता प्राप्त की है। एसटीएफ इंदौर की दो विशेष टीमों ने संयुक्त रूप से कार्रवाई कर 5 अत्याधुनिक पिस्तौलें मय मैगजीन जब्त कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

यह कार्रवाही उप पुलिस अधीक्षक एसटीएफ इंदौर श्री राजेश सिंह चौहान के निर्देशन में दो विशेष टीमों द्वारा की गई। इनमें प्रथम टीम में इंस्पेक्टर श्री रमेश चौहान, प्र.आर. भूपेन्द्र गुप्ता एवं आर. विवेक द्विवेदी तथा द्वितीय टीम में प्र.आर. आदर्श दीक्षित, आर. देवराज बघेल एवं आरक्षक देवेन्द्र सिंह शामिल थे।

एसटीएफ को प्राप्त विश्वसनीय सूचना के आधार पर अवैध शस्त्रों की धरपकड़ हेतु दोनों टीमों को कार्रवाई के लिए रवाना किया गया। सूचना के अनुसार बताए गए स्थान पर पहुंचकर टीमों द्वारा घेराबंदी कर दो संदिग्ध व्यक्तियों को रोका गया। विधिवत तलाशी के दौरान उनके कब्जे से 5 अत्याधुनिक पिस्तौलें एवं मैगजीन बरामद की गई।

पूछताछ के दौरान दोनों आरोपियों ने ग्राम बोराड़िया, थाना भिकनगांव, जिला खरगोन के रहना बताया। दोनों आरोपी किसी भी प्रकार का वैध शस्त्र लाइसेंस प्रस्तुत नहीं कर सके, जिस पर सभी हथियारों को जब्त करते हुए नियमानुसार कार्रवाई की गई।

प्रकरण में अवैध शस्त्रों की आपूर्ति, नेटवर्क तथा इनके संभावित उपयोग से जुड़े सभी पहलुओं की गहन जांच की जा रही है। मामले में आगे की वैधानिक कार्रवाई प्रचलन में है।

उत्साह और उमंग से भरपूर रही गणतंत्र दिवस परेड की फुल ड्रेस फाइनल रिहर्सल

हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनेगा गौरवशाली 77 वां गणतंत्र दिवस

फोटो: प्रवीण वाजपेई

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में 77वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास एवं गरिमामय ढंग से मनाया जाएगा। मुख्य समारोह 26 जनवरी को प्रदेश के राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल के मुख्य आतिथ्य में लाल परेड मैदान भोपाल में प्रातः 9 बजे आयोजित होगा। गणतंत्र दिवस समारोह में निकलने वाली संयुक्त परेड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अंतिम अभ्यास शनिवार को लाल परेड मैदान पर किया गया। पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाणा ने परेड एवं समारोह की व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

गणतंत्र दिवस की फुल ड्रेस फाइनल रिहर्सल के दौरान सातवीं बटालियन के प्रधान आरक्षक श्री राजमणि सिंह बघेल ने प्रतीक स्वरूप मुख्य अतिथि की भूमिका निभाई और ध्वजारोहण कर संयुक्त परेड की सलामी ली। हर्ष फायर के बीच पुलिस बैंड ने निरीक्षक श्री सुनील कटारे के निर्देशन में जन गण मन की धुन बजाई। मुख्य अतिथि के संदेश का प्रतीक स्वरूप वाचन भी किया गया। हर्ष फायर के बाद पुलिस बैंड की मधुर धुनों के बीच आकर्षक संयुक्त परेड निकाली गई। परेड का नेतृत्व भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी श्री आयुष जाखड़ ने किया। परेड टू आई सी का दायित्व एसडीओपी सैलाना जिला रतलाम श्रीमती नीलम बघेल ने निभाया। संयुक्त परेड में बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस, अश्वारोही दल व श्वान दस्ते सहित 23 टुकड़ियां शामिल थीं।

संयुक्त परेड में शामिल बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस-1 गोरखा बटालियन की टुकड़ी का नेतृत्व निरीक्षक श्री अशोक कुमार गिरी ने किया। इसी तरह हॉकफोर्स प्लाटून का नेतृत्व उप निरीक्षक श्री सोबरन सिंह, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी नेतृत्व निरीक्षक श्री रामाश्रेय पासवान, आईटीबीपी बल की टुकड़ी का नेतृत्व निरीक्षक श्री रामकुमार मालवीय, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल टुकड़ी का नेतृत्व निरीक्षक श्री संदीप तिवारी, मध्यप्रदेश विशेष सशस्त्र बल 01 की टुकड़ी का नेतृत्व 23वीं वाहिनी भोपाल के निरीक्षक श्री राजेश यादव, जिला बल महिला टुकड़ी का नेतृत्व निरीक्षक श्रीमती सरोज ठाकुर, एस.टी.एफ टुकड़ी का नेतृत्व निरीक्षक श्री नरेन्द्र सिंह कुशवाह, जिला बल पुरुष प्लाटून का नेतृत्व निरीक्षक श्री नरबद सिंह, मध्यप्रदेश विशेष सशस्त्र बल 02 की टुकड़ी का नेतृत्व निरीक्षक श्री विजय चौधरी, जेल विभाग पुरूष टुकड़ी का नेतृत्व सहायक जेल अधीक्षक श्री हेमंत रावत, मध्यप्रदेश होमगार्ड टुकड़ी का नेतृत्व पीसी श्री धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया, भूतपूर्व सैनिकों की टुकड़ी का नेतृत्व सेवानिवृत्त कर्नल श्री राजीव खत्री, एन.सी.सी. बॉयज टुकड़ी का नेतृत्व सीनियर अंडर ऑफिसर मो.तौकीर, गाइड गर्ल्स टुकड़ी का नेतृत्व सीनियर अंडर ऑफिसर कुमारी माधुरी पर्ते, स्काउट्स (बॉयज) टुकड़ी का नेतृत्व श्री सादिक अली, पुलिस बॉयज टुकड़ी का नेतृत्व श्री आदित्य उईके, शौर्य दल प्लाटून का नेतृत्व कुमारी नीलम परमार, राष्ट्रीय सेवा योजना प्लाटून का नेतृत्व श्री प्रियांश बघेल, एनसीसी गर्ल्स प्लाटून टुकड़ी का नेतृत्व सीनियर अंडर ऑफिसर कुमारी संस्कृति यादव, मध्यप्रदेश पुलिस बैंड का नेतृत्व निरीक्षक श्री सुनील कटारे, श्वान दल का नेतृत्व उप निरीक्षक श्री चंद्र सिंह उइके एवं अश्वारोही दल का नेतृत्व निरीक्षक श्री राकेश कुमार गौड़ ने किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की फाइनल रिहर्सल भी हुई

संयुक्त परेड के पश्चात विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों एवं संस्कृति विभाग के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अंतिम अभ्यास किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सागर पब्लिक स्कूल, कटारा एक्सटेंशन भोपाल के 150 विद्यार्थियों ने एक भारत, श्रेष्ठ भारत थीम÷ गीत पर नृत्य की प्रस्तुति दी। वहीं सेंट पॉल कोएड स्कूल, आनंद नगर के 200 विद्यार्थियों ने नृत्य की प्रस्तुति दी। रिहर्सल के दौरान संयुक्त रूप से 05 शासकीय स्कूलों के 160 विद्यार्थियों ने वीर-बेटियों की गाथा पर केन्द्रित नृत्य की प्रस्तुति दी। इसके साथ ही मध्य प्रदेश के लोकनृत्यों और लोकगीतों की भी सुमधुर प्रस्तुतियां दी गईं। इसमें बधाई लोकनृत्य, गणगौर और मटकी लोकनृत्यों की प्रस्तुति दी गई। इस दौरान कलाकारों ने प्रस्तुति देकर सभी उपस्थितजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

गणतंत्र दिवस की परेड में 22 विभागों की झांकियों होगी सम्मिलित

गणतंत्र दिवस की परेड के दौरान उद्यानिकी विभाग, आयुष विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग एवं म.प्र. राज्य कृषि विपणन बोर्ड, कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग, खेल और युवा कल्याण विभाग, गृह विभाग, जनजातीय कार्य विभाग, जल संसाधन विभाग, जेल विभाग, नगरीय विकास एवं आवास विभाग, पर्यटन विभाग, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग, वन विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम विभाग की झांकियां सम्मिलित होगी।

इनकी रही उपस्थिति

फुल ड्रेस अभ्यास परेड के दौरान अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एसएएफ श्री चंचल शेखर, भोपाल पुलिस कमिश्नर श्री हरिनारायणचारी मिश्र सहित अन्य वरिष्ठ पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को मुख्य सचिव अनुराग जैन ने समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की सफल यात्रा के लिए पुष्प-गुच्छ भेंट कर बधाई दी।

सीएम डॉ. यादव ने राष्ट्रीय बालिका दिवस की सभी बेटियों को दीं बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय बालिका दिवस की सभी बेटियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बेटियाँ हमारी संस्कृति, संवेदना और भविष्य की आधारशिला हैं। शिक्षा, सुरक्षा और समान अवसर पाकर बेटियों, समाज और राष्ट्र को नई दिशा दे रही हैं। उन्होंने कामना की कि सभी बेटियाँ आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों को साकार करें। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार हर बेटी को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए संकल्पित है।

अविमुक्तेश्वरानंद को गंगा स्नान से रोकने पर धरना-उपवास

पीसीसी चीफ बोले- हजारों साल में किसी ने शंकराचार्य से नहीं मांगा प्रमाण पत्र, मोदी-योगी मांग रहे

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार पर सनातन परंपराओं, साधु-संतों और धार्मिक आस्थाओं पर हमले का आरोप लगाते हुए शुक्रवार को कांग्रेस नेताओं ने राजधानी के रोशनपुरा चौराहे पर उपवास और धरना प्रदर्शन किया। पूर्व मंत्री पीसी शर्मा के नेतृत्व में यह उपवास-धरना रोशनपुरा चौराहे पर आयोजित किया गया, जिसमें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी भी शामिल हुए। कांग्रेस नेताओं ने शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती एवं उनके शिष्यों के कथित अपमान, साधु-संतों पर दमनात्मक कार्रवाई और काशी के मणिकर्णिका घाट जैसे पवित्र स्थलों को तोड़े जाने के

प्रयासों के विरोध में भाजपा सरकार की कड़ी निंदा की। धरना स्थल पर संबोधित करते हुए पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा कि हजारों वर्षों से सनातन परंपराओं में जगतगुरु शंकराचार्य की मान्यता स्वतः सिद्ध रही है, लेकिन आज उनसे प्रमाण पत्र मांगे जा रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार में जगतगुरु शंकराचार्य को गंगा स्नान से रोका गया।

लोकभवन में मना चार राज्यों का संयुक्त स्थापना दिवस समारोह

विविधता में एकता से सशक्त होता भारत : राज्यपाल पटेल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि स्थापना दिवस समारोह केवल प्रशासनिक इकाइयों के गठन का स्मरण नहीं, बल्कि भारत की संघीय संरचना, सांस्कृतिक समृद्धि और राष्ट्रीय अखंडता के उत्सव का पावन प्रसंग है। उन्होंने 'विविधता में एकता' को भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर बताते हुए कहा कि 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का संकल्प इसी भावना की जीवंत अभिव्यक्ति है।

राज्यपाल श्री पटेल मणिपुर, मेघालय और उत्तर प्रदेश राज्यों के संयुक्त स्थापना दिवस समारोह को शनिवार को लोकभवन में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने राज्यों के स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर राज्यपाल श्री पटेल को निदेशक राष्ट्रीय मानव संग्रहालय प्रो. अमिताभ पांडेय ने चित्रकार दोरेन सिंह द्वारा निर्मित केनवास पेंटिंग 'पुंग चोलम ऑफ मणिपुर' भेंट की। राज्यपाल के प्रमुख सचिव डॉ. नवनीत मोहन कोठारी, राज्यपाल के अपर सचिव श्री उमाशंकर भार्गव भी मौजूद थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' अभियान ने देश की विविधताओं को एक सूत्र में पिरोकर राष्ट्रीय एकता को नई ऊर्जा प्रदान की है। उन्होंने बताया कि स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पर 1 नवम्बर से 15 नवम्बर तक भारत पर्व के आयोजन में देश के सभी राज्यों की संस्कृतियों को एक मंच पर लाया जाता है। एकता नगर गुजरात में हुए गत वर्ष के समारोह में 11 नवम्बर को मध्यप्रदेश, मणिपुर एवं मेघालय का संयुक्त समारोह आयोजित हुआ था। इसमें राज्यों के राज्यपाल एवं मंत्री शामिल हुए थे। उन्होंने कहा कि विभिन्न राज्यों के स्थापना दिवस का यह संयुक्त आयोजन इस सत्य को पुनः स्थापित करता है कि भौगोलिक दूरी के बावजूद हमारी आत्मा, चेतना और संस्कार एक हैं। उत्तर भारत की आध्यात्मिक चेतना, पूर्वोत्तर की समृद्ध लोक संस्कृति और पश्चिमी भारत की समुद्री विरासत का संगम भारत को विश्व मंच पर एक सशक्त और प्रेरक राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करता है। राज्यपाल श्री पटेल ने स्थापना दिवस को क्षेत्रीय अस्मिताओं के सम्मान और राष्ट्रीय एकता को और अधिक सुदृढ़ करने के सामूहिक संकल्प का विशेष प्रसंग बताया। उन्होंने विकास, सुशासन और सामाजिक समरसता को राष्ट्र निर्माण का आधार बताया। सभी नागरिकों से सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया। उन्होंने उपस्थित जनसमूह से भारत की सांस्कृतिक विविधता को गौरव के रूप में अपनाने और 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध होने का आग्रह किया।

राज्यों के संयुक्त स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश राज्यमंत्री, जेल विभाग श्री दारा सिंह ने मध्यप्रदेश में रह रहे उत्तर प्रदेश मूल के लोगों को अपनी संस्कृति से जुड़े रहने के लिए बधाई दी। उन्होंने मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा और उत्तर प्रदेश की लोक प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि इन प्रस्तुतियों को देखकर ऐसा लगा मानो वे स्वयं उन राज्यों में पहुँच गए हों। उन्होंने बताया कि देश के 50 प्रतिशत एक्सप्रेस-वे उत्तर प्रदेश में हैं, तीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे संचालित हैं और अयोध्या में चौथा बन रहा है।

महाभारत समागम

भारत भवन के मंचों पर यक्षगान, द्रौपदी, महाभारत एवं मृत्युंजय का मंचन

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा भारत भवन में आयोजित सभ्यताओं के संघर्ष एवं औदार्य की महागाथा पर केंद्रित महाभारत समागम का आठवें दिन मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वीर भारत न्यास भारत की ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मनुष्य को श्रेष्ठ जीवन मार्ग, अध्ययन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रकृति संरक्षण की दिशा भी देती है। वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने मंत्रीजी का स्वागत किया। इस अवसर दर्शक नाट्य, नृत्य और लोकपरंपरा की समृद्ध प्रस्तुतियों का साक्षात्कार हुए। बहिरंग मंच पर जयंत देशमुख निर्देशित नाटक मृत्युंजय की प्रभावशाली प्रस्तुति हुई। इससे पहले अंतरंग सभागार में जापान की हिरोशी कोइके ब्रिज कंपनी द्वारा हिरोशी कोइके निर्देशित महाभारत का मंचन किया गया, जिसने अंतरराष्ट्रीय रंग-दृष्टि के साथ महाकाव्य को नए कलात्मक आयाम दिए। इसी क्रम में निवेदिता महापात्रा के निर्देशन में ओडिसी नृत्य-नाटिका द्रौपदी प्रस्तुत की गई। पूर्वरंग मंच पर पृथ्वीराज क्वायथर द्वारा निर्देशित यक्षगान ने लोकनाट्य की जीवंत परंपरा को सशक्त रूप में सामने रखा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य वीर भारत न्यास द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आने वाली नई शिक्षा नीति में बड़े बदलाव होंगे, जिससे बच्चों पर पढ़ाई का बोझ कम होगा और भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। महाभारत समागम के सफल आयोजन के लिए उन्होंने वीर भारत न्यास को बधाई और शुभकामनाएं दी।

मित्रता, कर्तव्य और उदारता का मानवीय चित्र- एकरंग, मुंबई द्वारा प्रस्तुत नाटक मृत्युंजय शिवाजी सावंत के प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित है। यह नाटक महाभारत के महान योद्धा कर्ण के जीवन की मार्मिक, प्रेरणादायक और दार्शनिक यात्रा को मंच पर साकार करता है। कथा कर्ण के जन्म, माता कुन्ती द्वारा त्याग, राधा-काटधन दंपत्ति के स्नेह में पालन-पोषण और सामाजिक अस्वीकृति से उपजे संघर्ष को संवेदनशीलता से उकेरती है। द्रोणाचार्य द्वारा अस्वीकार किए जाने के बाद भी कर्ण अपने पुरुषार्थ से स्वयं को महान धनुर्धर सिद्ध करता है। नाटक में कर्ण-दुर्योधन की मित्रता, कर्ण के भीतर

के द्वंद्व, उसकी कर्तव्यपरायणता और उदारता को गहराई से प्रस्तुत किया गया है।

पैन-एशियन प्रयोग और बहु-स्वरीय मंच भाषा- हिरोशी कोइके ब्रिज कंपनी, जापान द्वारा प्रस्तुत और हिरोशी कोइके निर्देशित महाभारत की नाट्य प्रस्तुति ने दर्शकों को एक अनूठे अंतर-सांस्कृतिक रंगमंचीय अनुभव से रूबरू कराया। यह मंचन विश्व के सबसे लंबे महाकाव्य को समकालीन संवेदना के साथ प्रस्तुत करता है, जहाँ कथा केवल पौराणिक आख्यान न रहकर शक्ति, कर्तव्य, इच्छा, त्याग और मानवीय सीमाओं पर गहन विचार बन जाती है। दक्षिण एशियाई दर्शन से प्रेरित यह कृति सह-अस्तित्व और सामंजस्य जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में सामने रखती है।

हिरोशी कोइके की नौ वर्षों की पैन-एशियन परियोजना में जापान, ओकिनावा, इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड के कलाकारों की सहभागिता रही है। विभिन्न भाषाओं, परंपराओं और रंगशैलियों के मेल से महाभारत की कथा बहु-स्वरीय मंच संरचना में उभरती है। महोत्सव में प्रस्तुत शपथ और पाप महाभारत से प्रेरित 30 मिनट की सघन प्रस्तुति है, जो भीष्म के जीवन पर केंद्रित है। नोह रंगमंच के अभिनेता रेइजिरो त्सुमुरा द्वारा अभिनीत भीष्म त्याग, निष्ठा और धर्म के प्रतीक बनकर उभरते हैं। सत्ता संघर्ष और युद्ध की अनिवार्यता के बीच शांति बनाए रखने का उनका प्रयास अंततः त्रासदी में बदल जाता है।

द्रौपदी -स्त्री अस्मिता की सशक्त रंगमंचीय अभिव्यक्ति- ओडिसी नाट्य बैले सेंटर, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत नृत्य-नाटिका द्रौपदी ऱ एक अदम्य भावना ने महाभारत की महान नायिका द्रौपदी को समकालीन दृष्टि से मंच पर जीवंत किया। निवेदिता महापात्रा के निर्देशन में यह प्रस्तुति केवल पौराणिक कथा का पुनर्कथन नहीं, बल्कि स्त्री अस्मिता, संघर्ष और प्रतिरोध की प्रभावशाली व्याख्या बनकर उभरी। द्रौपदी के जीवन के माध्यम से नाटक आज की सामाजिक संरचना में महिलाओं की स्थिति पर संवेदनशील प्रश्न खड़े करता है। अद्वितीय सौंदर्य, तीक्ष्ण बुद्धि और अपराजेय आत्मबल से युक्त द्रौपदी पुरुष-प्रधान व्यवस्था की क्रूरता का सामना करती है। स्वयंवर, पांच पतियों से विवाह और जुए की सभा में दांव पर लगाया जाना स्त्री को वस्तु समझने वाली मानसिकता को उजागर करता है। वनवास से लेकर युद्ध और स्वर्गारोहण तक द्रौपदी का संघर्ष निरंतर चलता रहता है। अंतिम यात्रा में उनका अकेला गिरना स्त्री जीवन की अनकही पीड़ा को गहराई से छूता है। ओडिसी की कोमलता और मयूरभंज छऊ की ऊर्जस्विता का सुंदर समन्वय इस नृत्य-नाटिका को कलात्मक रूप से सशक्त बनाता है। द्रौपदी - एक अदम्य भावना दर्शकों से यह प्रश्न करती है कि क्या आज की स्त्री अब भी द्रौपदी है, या अपने भीतर की शक्ति से नई कथा रच रही है।

यक्षगान - लोकनाट्य की जीवंत परंपरा- उडुपी, कर्नाटक के लोकनाट्य यक्षगान की प्रभावशाली प्रस्तुति भारत भवन में देखने को मिली। महाभारत से प्रेरित इस नाट्य का निर्देशन यक्षगान विशेषज्ञ एवं थिएटर यक्ष के संस्थापक पृथ्वीराज क्वाथर ने किया। प्रस्तुति में महाभारत युद्ध के तेरहवें दिन की कथा दिखाई गई, जहाँ द्रोणाचार्य द्वारा रचित चक्रव्यूह में प्रवेश कर वीर अभिमन्यु अद्वितीय साहस और कर्तव्यबोध का परिचय देता है। उसका बलिदान दर्शकों को भावुक कर गया।

यात्रा वृतांत

भावेश कानूनगो

ब्रजमंडल : बाहरी यात्रा से अंतर्मन की परिक्रमा तक

जनवरी की भीषण ठंड में हमारी यात्रा आरंभ हुई। रात्रि लगभग 1:30 बजे ट्रेन श्रीकृष्ण जी की जन्मभूमि पहुँची। स्टेशन पर उतरते ही सर्द हवा ने हमारा स्वागत किया। वहाँ से हम गिरिराज गोवर्धन की धर्मशाला पहुँचे। बाहर कई श्रद्धालु परिक्रमा की तैयारी में लगे थे। प्रातः होते ही मैंने सबसे पहले राधा रानी के गाँव बरसाना जाने का निश्चय किया। बरसाना पहुँचते ही चारों ओर 'राधा-राधा' की गूँज सुनाई देने लगी। संकरी गलियों में रिक्शाओं और वाहनों की भीड़ थी। नगर के बीचों-बीच से गुजरते हुए हम राधा रानी के मंदिर पहुँचे। ऊँचाई पर स्थित मंदिर तक पहुँचने के लिए पैदल चढ़ाई करनी पड़ी। रास्ते में छोटे-छोटे बच्चे लोगो के मस्तक पर टीका लगाने को आतुर खड़े थे, कई के मस्तक पर राधा रानी के समान टीके सजे थे।

साल बदल गया, पर मैं वही का वही हूँ। नए साल की शुरुआत मेरे लिए एक नई धार्मिक यात्रा का संदेश लेकर आई–श्रीकृष्ण की लीलास्थली ब्रजमंडल की यात्रा। यह यात्रा एक सामूहिक समूह के माध्यम से आयोजित थी, जिसका मुझे कोई पूर्व अनुभव नहीं था, इसलिए मन में अनेक शंकाएँ थीं। विशेषकर मेरे जैसे सुविधा-प्रिय व्यक्ति के लिए, स्लीपर क्लास में वह भी कड़ाके की ठंड में यात्रा करना, एक बड़ी चुनौती थी। ऐसी यात्राओं की कठिनाई का अनुभव मैं पहले भी कर चुका था।

जनवरी की भीषण ठंड में हमारी यात्रा आरंभ हुई। रात्रि लगभग 1.30 बजे ट्रेन श्रीकृष्ण जी की जन्मभूमि पहुँची। स्टेशन पर उतरते ही सर्द हवा ने हमारा स्वागत किया। वहाँ से हम गिरिराज गोवर्धन की धर्मशाला पहुँचे। बाहर कई श्रद्धालु परिक्रमा की तैयारी में लगे थे। प्रातः होते ही मैंने सबसे पहले राधा रानी के गाँव बरसाना जाने का निश्चय किया।

बरसाना पहुँचते ही चारों ओर 'राधा-राधा' की गूँज सुनाई देने लगी। संकरी गलियों में रिक्शाओं और वाहनों की भीड़ थी। नगर के बीचों-बीच से गुजरते हुए हम राधा रानी के मंदिर पहुँचे। ऊँचाई पर स्थित मंदिर तक पहुँचने के लिए पैदल चढ़ाई करनी पड़ी। रास्ते में छोटे-छोटे बच्चे लोगो के मस्तक पर टीका लगाने को आतुर खड़े थे, कई के मस्तक पर राधा रानी के समान टीके सजे थे।

संकरी गलियों और सीढ़ियों से गुजरते हुए जब मंदिर में प्रवेश किया, तो जयकारों की गूँज मन को भीतर तक स्पर्श कर गई। ऊँची अटारी पर राधा रानी और श्रीकृष्ण का विग्रह विराजमान था। विशाल हाल में भक्तों की भारी भीड़ थी। किसी तरह विग्रह के समीप दर्शन हुए। पंडित जी मुस्कुराते हुए भक्तों को चुनरियाँ प्रदान कर रहे थे, मानो राधा रानी स्वयं अपने भक्तों पर कृपा बरसा रही हों।

भीड़ के दबाव में मैं बाहर प्रांगण में आकर दूर से ही विग्रह को निहारता रहा। कोई वीडियो कॉल पर अपनों को दर्शन करा रहा था, तो कोई इस क्षण को कैमरे में कैद कर रहा था। समय कब बीत गया, पता ही नहीं चला।

वहाँ से उतरते हुए हम कीर्ति मंदिर पहुँचे। मंदिर का समय समाप्त होने को था, इसलिए शीघ्रता में दर्शन किए। मंदिर की नक्काशी और भव्यता मन को मोह लेती है। इसके बाद उन्हीं तंग गलियों, ट्रैफिक और भीड़ से गुजरते हुए हम पुनः गोवर्धन धाम लौट आए।

शाम को वृंदावन के दर्शन का कार्यक्रम था। सप्ताहांत की भीड़ के कारण वाहन बाहर ही रोकना पड़ा। रिक्शाओं से आगे बढ़े। श्री प्रेमानंद बाबा की यात्रा देखने की इच्छा थी, पर पता चला कि आज यात्रा स्थगित है। फिर भी उन्हें देखने की चाह हमें उनके आश्रम तक ले गई, जहाँ तंग गलियों से होते हुए आश्रम केली कुंज में स्थापित श्रीजी के विग्रह के दर्शन हुए।

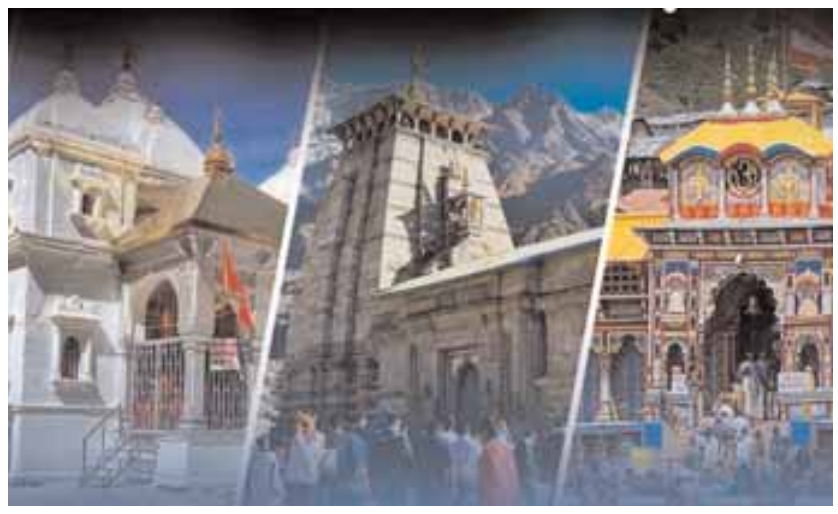

वहाँ से हम यमुना तट होते हुए निधिवन के लिए चल दिए । संध्या आरती का समय था। रास्ते में संकीर्तन करते भक्त, ढोलक और झाँझ की ध्वनि– सब मिलकर वातावरण को भक्तिमय बना रहे थे। निधिवन में प्रवेश करते ही परिवर्तन स्पष्ट दिखा। पहले जहाँ वृक्षों से आत्मीय संवाद सा अनुभव होता था, अब चारों ओर जालियाँ थीं। रास स्थली का वह स्वाभाविक सौंदर्य मानो सीमाओं में बाँध दिया गया हो।

नए मंदिरों की भरमार थी और मुख्य मंदिर पहचानना कठिन। दान की चर्चा अधिक प्रतीत हुई, जिससे मन में प्रश्न उठा कि क्या यही भक्ति का स्वरूप है। वहाँ से निकलकर हम राधा रमण मंदिर पहुँचे। यहाँ भी धन और पहुँच के आधार पर दर्शन का अंतर स्पष्ट दिखा, जिसने मन को कुछ क्षुब्ध किया। इसके बाद बाँके बिहारी मंदिर पहुँचे। थोड़ी देर बाद पर्दा डाल दिया गया। कारण बताया गया कि भगवान किसी भक्त के साथ न चले जाएँ, इसलिए समय-समय पर पर्दा लगाया जाता है। मन में ये भाव आया जो सर्वस्व व्याप्त है वो. कहा जा सकते हैं ओर कहा से आ सकते हैं। दर्शन कर हाथ जोड़ते हुए हम बाहर आ गए ।

प्रेम मंदिर में अत्यधिक भीड़ थी। गर्भगृह से लेकर प्रांगण तक श्रद्धालुओं का सैलाब था। यहाँ ऐसा लगा मानो दर्शन से अधिक यह स्थान एक दर्शनीय स्थल या फोटो-स्पॉट बन गया हो।

अगले दिन यात्रा का मुख्य उद्देश्य था–गोवर्धन परिक्रमा। इक्कीस किलोमीटर की इस परिक्रमा को नंगे पाँव पूर्ण करने का हमारा संकल्प था। दानघाटी से परिक्रमा आरंभ हुई। बच्चे, वृद्ध, साधु–सब अपने-अपने भाव में लीन थे। कुछ दूरी तक गिरिराज के दर्शन नहीं हुए, पर भाव यही था कि हम उनकी परिक्रमा कर रहे हैं।

आगे बढ़ने पर गिरिराज गोवर्धन के प्रथम दर्शन हुए, मानो वे स्वयं भक्तों को अपनी ओर बुला रहे हों। कोई पैदल, कोई दंडवत, तो कोई रिक्शा से परिक्रमा कर रहा था। मिट्टी ऐसी लग रही थी, मानो मखमल पर चल रहे हों। रोड से शुरू हुई परिक्रमा तलहटी की ओर मुड़ गई। झाड़ियाँ, बंदर और नाम-जप करते श्रद्धालु–सब मिलकर वातावरण को आध्यात्मिक बना रहे थे।

गोविंद कुंड और अन्य स्थलों के दर्शन करते हुए हम राजस्थान सीमा में प्रवेश कर चुके थे, पर इसका एहसास तक नहीं हुआ। राधा कुंड में पूजा में लीन थे। थकान के बावजूद मन आगे बढ़ने को प्रेरित कर रहा था। अंततः मानसी गंगा पहुँचे, जहाँ रात्रि का भव्य श्रृंगार मन को शांति प्रदान कर गया।

यहीं हमारी गिरिराज जी की परिक्रमा पूर्ण होने के साथ ब्रजमंडल यात्रा पूर्ण हुई। इस यात्रा ने भक्ति के अनेक रूप दिखाए–दंडवत करते श्रद्धालु, निस्पृह प्रकृति और भीड़ में लीन आस्थावान जन। यह यात्रा मेरे मन में एक गहरी और स्थायी अनुभूति छोड़ गई।

यह यात्रा केवल स्थलों के दर्शन तक सीमित नहीं रही, बल्कि आत्मचिंतन और अनुभूति की यात्रा बन गई। भीड़, अव्यवस्था और व्यावसायिकता के बीच भी भक्ति का वह शुद्ध रूप दिखाई दिया, जो नंगे पाँव परिक्रमा करते श्रद्धालुओं, नाम-जप में लीन साधकों और निस्पृह प्रकृति में बसता है। गोवर्धन की परिक्रमा के साथ ही मन की परिक्रमा भी पूर्ण हुई। इस यात्रा ने सिखाया कि सच्ची भक्ति मंदिरों की भव्यता में नहीं, बल्कि श्रद्धा, धैर्य और समर्पण में निवास करती है–और यही अनुभूति मेरे साथ लौट आई।

वसंत पर कुछ वासंती कविताएं

राजकुमार कुम्भज

उधर वसंत

फ़ुरसत नहीं है
न तुम्हें,न मुझे,न वक्त को ही
हम तीन हैं,तीनों ही जल्दी में हैं
सब कुछ आधा-अधूरा इधर
और उधर वसंत.

नाचता वसंत

बिना पूछे आया
आया संपूर्ण आया
कमतर नहीं ज़रा भी
फिर कौन हुआ कुरित
ठहरा कौन,कब,कहाँ
याद करता हूँ जीवन-सँगीत
या कि नाचता वसंत.

चुप-चुप आया है वसंत

छत पर,मुँडेर पर
घर-आँगन,दीवारों-सड़कों पर
चुप-चुप आया है वसंत
पुनः पुनः ताज़ा ख़बर जैसे
दरारें दर्पण की फाँदते हुए
कामना लिए मुक्त.

अपना-सा वसंत

है सब कुछ है सरल
ख़ारिज़ हैं अफ़वाहें अफ़सोस
पत्ते-पत्ते पर ओस-कण
जन्म-जन्मांतर थोड़ा-थोड़ा
अपना-सा वसंत.

अशर्फ़ियाँ लुटाता है वसंत

उत्सव है जगह-जगह
आनंद का अभिनंदन है बे-हिसाब
नशा ही नशा है चारों तरफ़
अशर्फ़ियाँ लुटाता है वसंत
बाक़ी बे-मतलब

चुनौतियों का सकारात्मक पक्ष

संघर्ष से सृजन

मेघा राठी

लेखक साहित्यकार हैं।

जीवन है तो कठिनाइयां भी होंगी और कठिनाइयां है तो उनका सामना भी करना ही होगा। जितना आसान यह कहना है उतना ही कठिन होता है यह करना लेकिन जीवित रहने के लिए इसके अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है। कभी सहना भी पड़ता है तो कभी कहना भी होता है और सुनना भी पड़ता है लेकिन इन सबके मध्य सामंजस्य बिठा कर आगे बढ़ना महत्वपूर्ण होता है।

समय के अनुरूप खुद को ढाल लेना आवश्यक है। हर चोट, हर दुःख, हर पीड़ा समय आने पर याद आएगी ही लेकिन इन में उलझ कर ही बैठे रह गए तो समय तो व्यतीत हो जाएगा किंतु हाथ खाली ही रह जायेंगे और मन का असंतोष कुंठा बढ़ा कर तन के साथ मन को भी बीमार कर उसे प्रदूषित कर देगा। यह प्रदूषित मन अपने आस ङ्कपास के वातावरण ओर लोगों को भी कड़वाहट ही देगा। ऐसे व्यक्ति से लोगों का दूरी बना कर चलना स्वाभाविक है फिर शिकायत होगी कि हम अकेले रह गए।

वास्तव में यह सारा खेल मन का है और मन की लगाम कसना मस्तिष्क की क्षमता पर निर्भर करता है। मस्तिष्क की परिपक्वता ही मनुष्य को हर अनुकूल और विपरीत परिस्थिति का सामना करने की शक्ति देती हैं। यह सामना करने शक्ति हम कितने समय में संजो पाते हैं ,सारी बात यही पर आकर रुक जाती है।

यह आवश्यक नहीं कि हर व्यक्ति की क्षमता एक समान हो हो। पीड़ा सहने की प्रत्येक व्यक्ति की सीमा अलग होती है। जब पीड़ा उस सीमा के अंतिम बिंदु तक पहुंच जाती है उसके बाद ही उसमें सामना करने की हिम्मत आनी आरम्भ होने लगती है क्योंकि इस स्थिति में आने के बाद वह यह समझ चुका होता है कि या तो पलायन अथवा सामना, इसके अतिरिक्त उसके पास कोई रास्ता नहीं बचा। तब मस्तिष्क जाग्रत होने लगता है और समाधान के विषय में चिंतन करने लगता है।

चिंतन करने के बिंदु पर आते ही मनुष्य की इंद्रियां भी जाग्रत होने लगती हैं। इंद्रियों का जाग्रत होना मनुष्य को जीवित होने का अहसास करवाता है और फिर वह सक्रिय हो जाता है। वह यह समझने का प्रयास करने लगता है कि वास्तव में समस्या कितनी बड़ी है? क्या समस्या का समाधान आवश्यक है अथवा उसे अनदेखा कर आगे बढ़ा जा सकता है। इस स्थिति में आते ही मस्तिष्क सबसे पहले मन पर नियंत्रण करता है और समस्या के प्रकार पर विचार करने लगता है।तब उसे ज्ञात होता है कि समस्या वास्तव में थी या उसके मन ने किसी अनदेखा करने योग्य घटना अथवा बात को समस्या बना दिया। उसे विचार करने के बाद समझ आता है कि उसका कितना समय इस समस्या पर नष्ट हुआ।

लेकिन यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि समय व्यर्थ नष्ट नहीं हुआ है यदि इसके बाद हमारी मनन करने की क्षमता बढ़ी और उससे हमें सामना करने शक्ति मिली हो तो। यह समय सीमा प्रत्येक व्यक्ति की अपनी ङ्कअपनी मानसिक अवस्था पर निर्भर होती है। किसी को अधिक समय लगता है तो किसी को कम। अतः बीते हुए समय पर प्रलाप न कर भविष्य को देखना श्रेयस्कर होगा। उस समय से हमें सकारात्मक रूप में क्या प्राप्त हुआ, इसे समझना आवश्यक होगा। आसान कुछ भी नहीं है यह समझ कर भावनात्मक स्थिति को नियंत्रण में रखकर मुस्कुरा सके तो आगे बढ़ना कठिन नहीं होगा।जीवन में हर संघर्ष हमें कुछ सिखाने आता है, यह हम पर निर्भर करता है कि हम क्या सीखते हैं। हो सकता है कि जो समस्या आज इतनी बड़ी लग रही है, कुछ समय बाद वही एक अवसर के रूप में दिखाई दे जिसने आपके भविष्य को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण किरदार निभाया।

माँ, माँ होती है

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

वक्त हमारी मिल्कियत नहीं होता
दिन महीना और साल पर साल
जैसे मुट्ठी में समेटी गंगा की माटी
वो है शुद्ध प्रबुद्ध और चेतन
खाली पाटी साफ निर्मल मन जैसी
हर्फ़ और हर्फ़ों में छुपी इंसानियत
कायनात से रूहानी प्रेम का सबक
माँ महज शब्द नहीं होती।
घर, घर की दीवारें, दहलीज
आंगन रसोई और पूजा घर
दीया बाती अगरासन
माँ को हेरते चौके में
अब भूख नहीं लगती।
जीत-हार, हार-जीत के
प्यादे, मुहरे अपने पराये (इसे ऐसे ही पढ़ें)
और कुछ पराये अपने
औचक सचेत खुदगर्जों से
माँ!
यकायक वह वक्त
तुम्हारी सीख नफरतें नहीं सींचती।
अनुष्ठान अपने से इतर अपनों के लिए
स्मृति की डायरी में दर्ज
पलटते सफा और पन्नों के दरमियां
वह ताकत वह वक्त
नवंबर पलट जाती है
इसकी खौफ इसकी टीस नहीं पलटती।
हमारी आंखों ने हेरा खोजा
हवा बताओ धरती बताओ
पानी की आवाज बताये
बता दे आग या कहे आसमान
कहां समाया उसका आकार
कैसी है उसकी सूरत
धुयें और राख में समाई
माँ की सूरत पंच तत्वों में नहीं दिखती।
कच्ची धूप
कुहासे से ढकी वो तारीख
अहसासों के फासलों में
माँ, माँ होती है!

बाल कहानी

लालबहादुर श्रीवास्तव

जय-जय गणतंत्र

आज सुबह सुबह सहाना रजाई छोड़ दादा के पास आकर तुतलाती हुई बोली -दादा बधाई हो बधाई।गणतंत्र दिवस की बधाई।

सहाना तुम्हे भी बधाई ।

दादा ,आज मैं भी आपके संग संग परेड ग्रांऊड में चलूंगी ।अब मैं थोड़ी बड़ी हो गई हूं। आप मुझे छोड़कर अकेले चले जाते हो।

हां तुम सच कहती हो ।तुम हो ही इतनी छोटी तुम्हें वहां ले जाना थोड़ा कठिन है ।

क्यों दादा ?

तुम्हें गोदी में उठाकर ले जाना ।इतने समय तक गोदी में बैठाना।फिर वहां बहुत समय भी लग जाता है ।कभी कभी वहां कुरसी बैठने को नहीं मिलती।खड़े खड़े पूरा कार्यकम देखना होता है।

सहाना तपाक से बोली -दादा तुम मुझे जल्दी से

नो बजे के पहले लेकर जाना ।हमें बैठने की जगह मिल जाएगी।

ठीक है सहाना तुम जल्दी से मम्मी के पास जाकर तैयार हो जाओ ।मैं तुम्हें लेकर चलूंगा।

सहाना नन्हे कदमों से दूसरी मंजिल पर जा पहुंची ।

मां !ओ मां !क्या हुआ सहाना ।मां आज दादा के साथ परेड ग्राऊंड मे जाना है ।जल्दी से तैयार कर दो ना मां।

हां बेटा करती हूं तुम्हारे लिए नाश्ता बना रही हूं तब तक तुम दूध पी लो।

सहाना गट गटा गट दूध पी गई।मां ने नहला दुहला कर तैयार कर दिया ।पापा सहाना के लिए सफेद कुर्ता पजामा सफेद टोपी तिरंगा रूपटटा लेकर आए थे ।

सहाना को मां ने पहना दिए।सहाना फूलो सी खिली खिली लग रही थी।

लो अब नाश्ता भी कर लो -मां ने कहा।सहाना ने दादा को आवाज लगाकर नाश्ते के लिए ऊपर बुलवा लिया ।दोनों ने नाश्ता किया ।

चलो दादा ,अब हम चलते हैं नो बजने में पंद्रह मिनट रह गये है ।सहाना दादा की गोदी में चढ़ बैठी ।घर के पास ही परेड ग्राऊंड था।कुछ ही समय में सहाना दादा के साथ परेड ग्राऊंड

जा पहुंची। पांडाल आज गुब्बारों और रंग बिरंगी पन्नियों से सजा-धजा था।देशभक्ति के गीत बज रहे थे।

दादा! दादा! देखो कुर्सी खाली है ।अपने नन्हें हाथों से इशारा करते हुए सहाना ने दादा से कहा। दादा सहाना को लेकर बड़े आराम से बैठ गये।मंच से उद्घोषणा हुई -अब हमारे मंत्रीजी गणतंत्र पर्व पर तिरंगा फहराएगे ।सहाना बोल पड़ी-दादा ये तो जय दादा की सुरीली आवाज लगती है । हां सहाना पर तुमने कैसे आवाज को पहचाना ।अरे दादा आप भी ,डाक्टर जय दादा घर पर जब आते हैं तो अपने प्यारे अल्फा को भी साथ लाते हैं उससे और मुझसे कितने प्यार से बतियाते हैं और यहां भी कितनी मधुर वाणी में गणतंत्र पर्व का संचालन कर रहे है बस मैं इसी कारण से समझ गई ये डाक्टर जय दादा ही होने चाहिए।।

मंत्रीजी मंच से नीचे उतरे ।उन्होंने झंडे की जैसे ही डोर खींची प्यारा तिरंगा आसमां में लहरा उठा।देख सहाना दादा की गोद में उछल गई।जन गण मन की धुन जैसे ही बजने लगी दादा के साथ सबको खड़ा होते देख सहाना भी गोद में खड़े होने का प्रयत्न जब करने लगी दादा समझ गये ,सहाना भी तिरंगे को सम्मान देना चाहती है।सहाना को अपने हाथों से दादा ने खड़ा कर दिया।मंच से उद्घोषणा हुई अब मंत्रीजी परेड की सलामी लेंगे ।खुली जीप में मंत्रीजी कलेक्टर जी,एस पी साहब सलामी के लिए निकले ।पुलिस जवानों , स्काउट दलों ने उन्हें सलामी दी।बच्चों के स्कूली बैंड में शामिल भूमि,आध्या ,अदविक प्रियांश, लक्ष,सानवी,श्रीनिका की शानदार धुन से सहाना मंत्रमुग्ध हो रही थी ।बार बार ताली बजा रही थी।थोड़ी ही देर में स्कूली बच्चों के नृत्य शुरू हो गये ।डांस देख सहाना भी दादा की गोदी में नाचने झूमने लगी ।दादा ने समझाया बेटा तुम थोड़ी बड़ी हो जाओ तब तुम भी परेड ग्राउंड में डांस करना।

सुंदर सुंदर मनमोहक झांकियां जब विभागों की निकलने लगी ।वन विभाग की झांकी में भालू ,जिराफ शेर खरगोश बंदर हाथी नाच रहे थे ।सहाना इन्हें देख फिर ताली जोर जोर से बजाने लगी। सहाना ने पूछा- दादा क्या ये सुंदरवन से आए हैं ।नहीं बेटा ये तो मनोरंजन करने वाले लोग हैं जिन्होंने हमारे मनोरंजन के लिए इनकी खाल पहनी है ।

दादा मुझे भी इनसे मिलना है।

ठीक है सहाना ।जब कार्यकम का समापन हो जायेगा तब हम इनसे मिल लेंगे।

अब बारी है प्रतिभाओं को पुरस्कृत करने की ।

अच्छे कायो के लिए विभागों के लोगों और बच्चों को पुरस्कृत किया जा रहा था।परेड ग्राउंड में जिन बच्चों ने प्रर्दशन किया था उन्हें भी ट्राफी और प्रमाणपत्र देकर मंत्रीजी पुरस्कृत कर रहे थे।

सहाना अचानक दादा का नाम पुकारने पर चौंक सी ग?ई।सहाना ने इशारे से दादा को मंच पर चलने के लिए इशारा किया।सहाना समझ गई थी दादा को भी कहानी कविता के लिए आज पुरस्कार मिलने वाला है।दादा सहाना को लेकर जब मंच पर गये ।तालियों की गड़गड़ाहट से सहाना खुशी से झूम उठी।दादा को मिली ट्राफी और प्रमाणपत्र में से ट्राफी को अपने नन्हें हाथों से उठा लिया।

अब सहाना की नजर डाक्टर जय दादा पर जब पड़ी ।टाटा टाटा उनसे करने लगी। जय दादा भी सहाना के पास आकर उसे प्यार करने लगे ।

सहाना बोल पड़ी -डाक्टर दादा मैं भी जल्दी से बड़ी हो जाऊं ,मैं भी बच्चों के लिए छोटी छोटी कहानी कविता लिखूंगी।फिर तो मुझे भी ट्राफी मिलेगी ना।

हां सहाना !अभी तो तुम छोटी हो ,बडी हो जाओ फिर दादा जैसा नाम कमाना ।

जेब से मीठी मीठी टाफी देते हुए डाक्टर जय दादा ने सहाना के बालमन को समझाया और कहा सहाना अभी तो तुम ये छोटी टाफी ले लो फिर बड़ी बड़ी ट्राफी जीतकर हम सबका मान बढ़ाना।

सहाना जोर से बोल पड़ी जय -जय गणतंत्र।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लोक कला, कला और अनंत लोक की यात्रा

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

गइया के गोबरा लियाउब,
अंगन लिपवाउब हो।
ओंहपा चउक पुरवाउब,
त कुसन के असना लगाउब हो।
हे रामा देवता मनाउब हो।।

चौक पुरना के जैसे पता नहीं और कितने ही लोकपर्व हैं जिसके इतिहास, भुगोल का कोई ओर-छोर ही नहीं है पर इतना तो अवश्य है कि ये सभी हमारे रहन-सहन और व्यवहार में हमेशा से रहे हैं। धरा, धरा पर पलने वाले कण और कणों से निर्मित आकारों का आपसी तालमेल तो हमेशा से ही रहा है और यही सब चीजें धीरे-धीरे लोक में व्याप्त होती गई होंगी। लोक कला के बारे में कुछ भी कहने से पहले इतना तो अवश्य कहना है कि इसके समय और आगे-पीछे के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी किसी को भी नहीं है। हाँ इतना अवश्य है जो चीजें आसान होती हैं, उसका प्रयोग ज्यादा होता है, उसकी उम्र बहुत ही अधिक होती है और ये सारी चीजें लिखित में चाहे जब आई रही होंगी पर जीवन में हमेशा से रही हैं। लोक पर्वों में हमारे आसपास की वस्तुओं का भी महत्व बढ़ जाता है मसलन, गाय का गोबर, कुश, आम की टेरी, आदि। सभी को महत्व और सम्मानजनक स्थान के साथ देखा जाता है।

वेदों में भी..

अरं कृण्वन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुरः।

तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै।।÷ (ऋ 01/170/04)

हे ऋत्विजो! तुम वेदी को धारण करो, उत्तम रीति से उसका निर्माण करो, अलंकृत करो एवं हमारे सामने अग्नि को प्रज्वलित करो, जलाओ। वहाँ अमरणधर्मा नित्य जीव को ज्ञान कराने वाले..(ऋ01/170/04)। वेदी, साज-सज्जा, अलंकरण का जिक्र तो कब से मिलता आया है, चौक जैसा कुछ यहाँ भी तो रहा ही होगा। वेदी के सजावट, अलंकरण, के पृष्ठभूमि को ध्यान से देखा जाए तो लोक के लक्षण वहाँ भी हैं।

अपने देश में कला की बात सृष्टि के सृजन के समय या पूर्व यानि कि सृष्टि सृजन की जब भूमिका बन रही होगी तब से ही है। मनुष्य ही नहीं प्रकृति में जो स्वयं से ही कभी-कभी कुछ सृजित हो जाता है कला तो वहाँ भी है। बादलों का पल-पल पर रंग बदलना, भास्कर की वजह से वसुंधरा

पर पड़ रहे वृक्षों के छाया में समय के साथ परिवर्तन और आकृतियों का बदलना, समय के साथ, मौसम के साथ धरा के रूप और श्रृंगार में परिवर्तन मतलब उजाड़ से हरे-भरे, पीले-लाल फूलों से लद जाने और मनमोहन दृश्य का साक्षात होना, क्या है आखिर? रंग-बिरंगी, धानी-परिधानी माहौल उत्सव की भांति नजर आता है और किसी भी उत्सव की कल्पना बिना कला मुमकिन नहीं है।

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम।
आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषिं दधानः।। (ऋ 01/35/04)

यज्ञ के योग्य सविता एवं लोक में व्याप्त अंधकार को दूर करने वाली तेज किरणों का स्वर्ण सम बखान, सूर्य और पूरे वातावरण का बखान, प्रस्तुतिकरण प्राकृतिक सौंदर्य और कला के मर्म का बाकायदा में किया गया प्रदर्शन है। बहुत समय पहले जब रहन-सहन जंगलों में रहा होगा, गुहा या गुफा में रहा होगा, दीवारों पर आंड़ी-तिरक्षी रेखाओं के रूप में ही सही पर कला तो रही ही होगी। अभी के खोजों में जिस भी समय का जिक्र हो रहा है उससे भी बहुत-बहुत पहले का अगर अनुमान लगाया जाय तो पता नहीं कितनी-कितनी सभ्यताओं की बात आंखों के सामने तैर जाती है और सभी सभ्यताओं के साथ कदम मिला कर चली है कला। क्या आज बिना कला जीवन सम्भव है? नहीं है। तो कैसे संभव है कि उस समय के लोग बिना कला के जीवित रह सकते रहे होंगे?

मनुष्यों के खून में बसी है कला। जैसे खाने-पीने और पहनने हेतु भोजन सहित अन्य वस्तुओं की जरूरत होती है वैसे ही कला की भी जरूरत है और हमेशा रही है। बिना इसके जिंदगी में अंजोर नहीं बल्कि अंधेरा है। ध्यान लगाकर देखा जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि पहले अक्षर या शब्द नहीं बल्कि लकीर खींचने के प्रयास में एक बच्चा पत्थर, लकड़ी या कलम-दवात उठाता है। ये तो सिद्ध है कि पहले अक्षर नहीं बल्कि लकीर वजूद में आई होगी और यदि अक्षर भी वजूद में पहले रहा होगा तो वहाँ भी कला ही है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे जगहों से बहुत पहले से ही गुहा चित्रों के प्रमाण मिलने लगे थे। लिखुनिया दरी तो इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। वैदिक युग या और भी पहले के समय को समझें तो पाएंगे कि अब तक आखेट और लड़ाई झगड़ों के चित्रों से इतर बात मन के सुकून और आनंद तक पहुँच गई थी जो इसके पहले भी कई बार रही होगी पर उसका ज्ञान हमें आपको नहीं रहा होगा। हम आप किसी चीज की थाह नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं इसका मतलब उस चीज के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा देना तो जायज नहीं होगा। हमारी नजर हर अथाह को थाह सके जरूरी तो नहीं है। चित्र जो दीवारों और धरती पर बनने तक पहुँच गये थे, जो आगे चलकर पूजा-प्रतिज्ञा तक पहुँच गये थे। जहाँ शुरू में देवी-देवता और यक्ष के चित्र, मूर्ति मूर्तन न होकर संकेतों में होते रहे थे, जहाँ वृत्त, त्रिकोण, चतुर्भुज जैसे लकीरों से पूजा-पाठ, परिक्रमा के काम आगे बढ़ाए जाते रहे हैं। लकीरों को खींचने हेतु गेरू, कोयला, खड़िया, जैसे और भी सामानों का प्रयोग हुआ है। रंगों हेतु आसानी से मिल जाने वाले चीजों के प्रयोग होते रहे थे। जिसमें रंग-रंग के दाने, हल्दी, कुंकुम, फूल-पत्ती, रंग-रंग के मिट्टियों का भी प्रयोग होता रहा था। ज्यामिति आकारों का प्रयोग अलग-अलग अर्थों के हिसाब से, अनुष्ठानों के हिसाब से उनके प्रयोगों पर जोर दिया जाता था ताकि पैसों के विशेष खर्च के बिना भी रीति रिवाजों को निभाया जा सके। तब घर दुआर सजाने हेतु, उत्सव, त्योहार मनाने हेतु कैनवास और पेपर की जरूरत नहीं होती थी बल्कि जमीन और दीवार ही काफी थी। रंग-रोगन से अपना घरे-दुआर, गाय-गोरू के सींगों, गोरुआरों आदि को रंगने परंपरा बनी रही। शुरू-शुरू में जिसकी शुरुआत बस सुंदरता बढ़ाने के लिए रही वो समय के साथ लोगों हेतु उनके जिंदगी का जरूरी हिस्सा बन गई और आगे चलकर परिवार संस्कार और त्योहार में बदल गई जिसका विकास पुस्त-दर-पुस्त, पीढ़ी-दर-पीढ़ी होती चली गई और पुरुष या महिला दोनों के साथ अपने अस्तित्व को बचाते हुए जुड़ गई। किसी भी शादी-ब्याह, तीज-त्योहार, पूजा-पाठ आदि में कुछ न कुछ चित्र बनाना जरूरी सा हो गया जहाँ अधिकांश महिलाएं घर के साज-सज्जा और चित्रकारी का जिम्मा अपने सिर उठा लीं और गजब की बात ये रही कि उन्हें आभास तक भी नहीं था कि कितनी बड़ी जिम्मेदारी के साथ वो आगे बढ़ रही थीं, अपने कला और संस्कृति को बचाते हुए आगे बढ़ रही थीं और उन्होंने कभी खुद को कलाकार भी नहीं माना।

यही साज-सज्जा आगे चलकर लोक कला के रूप में अपना स्थान बनाया। लोक शब्द को दो अर्थों में देखा जा सकता है पहला समाज और दूसरा जन साधारण या जन समुदाय से हैं। इनके सब के हाथों टेढ़ी भेड़ी किंतु भाव से भरे चित्रों को भी लोक कला कहा जाता है। लोक कला में रीति-रिवाज, परंपरा आदि को बचा के रखने की शक्ति है। आम जन के मन से जुड़े रहने खातिर, बिना लिखे रूप में, बिना किसी तैयारी या साक्ष्य के, ये पूरे समृद्ध अवस्था में अगली पीढ़ी तक आसानी से पहुँच जाती हैं और अपने मूल रूप से पहुँच जाती हैं इसका बड़ा कारण, बड़ी विशेषता कलाकारों का अनाम रहना है। इस कला में थोड़ा- थोड़ा करके कई लोग कार्य करते थे। ध्यान से देखा जाए तो शास्त्रीय कला हेतु कला की और भी जानकारी होनी जरूरी होती है जबकि लोककला इन सभी से परे की चीज है। लोक कला सभी रिश्तों के साथ घुल-मिल कर अपने रूप में सभी के बीच रहते हुए हमेशा से यात्रा में रही है। कलाकृतियों के सुंदर-असुंदर जैसी बातें यहाँ नहीं होती है। चित्र गूगल से साभार है।

लोकतंत्र के प्रति आस्था एवं विश्वास की समृद्धि का पर्व

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

लोकतंत्र के बारे में अब्राहम लिंकन का वह कथन प्रकाश स्तंभ बन चुका है जिसमें कहा गया है कि लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए जनता द्वारा चुनी गयी शासन प्रणाली है। यह प्रणाली तभी सार्थक सिद्ध होगी जब समाज लोकतांत्रिक प्रक्रिया से अवगत होते हुए मतदान की महत्ता को समझे। वह अपने एक वोट की प्रतिष्ठा एवं गुरुता तभी समझ सकेगा जब वह 17 अप्रैल, 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की सरकार का एक वोट से गिर जाना समझ पायेगा। अतः मतदाताओं में मतदान करने के प्रति उत्साह जगा निर्भय होकर मतदान करने, मतदान केंद्रों के अधिकारिता क्षेत्र में 18 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके युवक-युवतियों का पंजीकरण कर नये मतदाता बनाते हुए फोटोयुक्त मतदाता पहचान पत्र उपलब्ध कराने तथा प्रत्येक मतदान केंद्र एवं बूथ में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए 25 जनवरी को प्रति वर्ष राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। समाज जागरण के लिए इस दिन विविध कार्यक्रमों का आयोजन सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा किया जाता है।

लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में आम जन को आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के समान अवसरों की उपलब्धता एवं क्रियान्वयन को प्रमुखता दी गई है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संस्कृति के विकास के लिए प्रत्येक नागरिक एवं समाज को स्वतंत्रता होती है। लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा भारत वर्ष के लिए नवल विचार नहीं है क्योंकि यहां राज व्यवस्था में यह चिंतन प्राचीन काल से ही प्रभावी रहा है। रामराज्य में प्रजा हर प्रकार से सुखी थी। रामायण में रामराज्य का वर्णन जन हितकारी राज्य का अद्भुत उदाहरण है। महाभारत के शान्तिपर्व में भी मृत्यु शैय्या पर लेटे भीष्म ने युधिष्ठिर को राजधर्मानुशासन का पाठ पढ़ाते हुए जन सामान्य की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने का उपदेश दिया है तो विष्णुगुप्त चाणक्य ने भी अपने राजनीति विषयक ग्रंथ अर्थशास्त्र में लोकहितैषी राजा के गुण एवं आदर्श का वर्णन किया है। वास्तव में लोक कल्याणकारी राज्य का पथ लोकतांत्रिक निर्वाचन प्रक्रिया की भूमि से ही गुजरता है। क्योंकि लोकतंत्र में तानाशाही और निरंकुश सत्ता अधिनायक के लिए कोई जगह नहीं होती। इस प्रणाली में जनता को लोक हितैषी प्रतिनिधि चुनने एवं लोक हितकारी शासन सत्ता स्थापित करने का अधिकार होता है। साथ ही अपेक्षानुरूप प्रदर्शन करने में अक्षम होने पर जनता सत्ता के परवर्तन करने का हक भी रखती है। और यह सम्भव होता है चुनाव अंतर्गत गोपनीय मतदान प्रक्रिया द्वारा, जिसका संचालन भारत निर्वाचन आयोग करता है। मतदान के प्रति जन जागरूकता एवं मतदाता भागीदारी बढ़ाने हेतु प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष देश 16वां मतदाता दिवस मना रहा है।

लोकतंत्र के बारे में अब्राहम लिंकन का वह कथन प्रकाश स्तंभ बन चुका है जिसमें कहा गया है कि लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए जनता द्वारा चुनी गयी शासन प्रणाली है। यह प्रणाली तभी सार्थक सिद्ध होगी जब समाज लोकतांत्रिक प्रक्रिया से अवगत होते हुए मतदान की महत्ता को समझे। वह अपने एक वोट की प्रतिष्ठा एवं गुरुता तभी समझ सकेगा जब वह 17 अप्रैल, 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की सरकार का एक वोट से गिर जाना समझ पायेगा। अतः मतदाताओं में मतदान करने के प्रति उत्साह जगा निर्भय होकर मतदान करने, मतदान केंद्रों के अधिकारिता क्षेत्र में 18 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके युवक-युवतियों का पंजीकरण कर नये मतदाता बनाते हुए फोटोयुक्त मतदाता पहचान पत्र उपलब्ध कराने तथा प्रत्येक मतदान केंद्र एवं बूथ में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए 25 जनवरी को प्रति वर्ष राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। समाज जागरण के लिए इस दिन विविध कार्यक्रमों का आयोजन सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा किया जाता है। विविध क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोकप्रिय नायकों के मतदान करने सम्बंधी प्रेरक वायस एवं वीडियो संदेश, वृत्तचित्र एवं लघु फिल्म आदि का प्रसारण रेडियो एवं टेलीविजन पर किया जाता है। स्कूल, कालेज एवं विश्वविद्यालयों में वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन, क्विज काम्पटीशन, रंगोली, चित्रकारी एवं रेखांकन, भाषण एवं संगोष्ठियों का आयोजन करके मतदान के महत्व से जन सामान्य को परिचित कराते हुए अपने मत के उचित प्रयोग हेतु जागरूक किया जाता है।

शपथ भी दिलाई जाती है। मतदाता दिवस के आयोजन हेतु हर वर्ष एक थीम निर्धारित कर तदनुसार कार्यक्रम किये जाते हैं। 2025 में %मतदान जैसा कुछ नहीं, वोट जरूर डालेंगे% की थीम निर्धारित थी, जबकि इस वर्ष 2026 की थीम है - मेरा भारत, मेरा वोट; जो सामयिक एवं प्रेरक है।

उल्लेखनीय है कि 25 जनवरी, 1950 को भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना एक स्वायत्त संवैधानिक संस्था के रूप में की गयी थी। आयोग की 61वीं वर्षगांठ के अवसर पर 25 जनवरी, 2011 को प्रथम राष्ट्रीय मतदाता दिवस का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटिल द्वारा किया गया था। तब से प्रत्येक वर्ष सम्पूर्ण देश में इस दिवस को उत्सव की तरह मनाते हुए व्यापक स्तर पर विविध कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। ध्यातव्य है कि चुनाव आयोग के कार्यों में लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभाओ सहित राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के चुनाव करवाना शामिल है। सहयोग के लिए प्रत्येक प्रदेश में राज्य निर्वाचन आयोग भी गठित है जो विभिन्न पंचायतों एवं नगर निकायों आदि के चुनाव कराता है। आयोग की इस 75 साल से अधिक की सांस्थानिक यात्रा में तमाम उतार चढ़ाव आये, अच्छे-बुरे अनुभवों से भी गुजरना हुआ। लेकिन चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष, गतिशील, पारदर्शी, सर्व समावेशी, लोकतांत्रिक एवं न्यायपूर्ण बनाये रखने तथा बेहतरी के लिए सतत साधनारत रहा है। इसीलिए आज हम आयोग के कार्यों में स्तरोन्नयन एवं गुणवत्तापूर्ण बदलाव महसूस कर पा रहे हैं। बहुसदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र की जगह एकल सदस्यीय निर्वाचन बनाने, साधारण छपी हुई मतदाता सूची के स्थान पर कम्प्यूटरीकृत फोटो युक्त मतदाता सूची प्रकाशित करने, सचित्र मतदाता पहचान पत्र निर्गत करने तथा कागज के मतपत्र की जगह इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से मतदान कराने तथा मतदाता द्वारा अपने मतदान को ईवीएम में डालने के बाद देखने हेतु विविपैट इस्तेमाल करने जैसे सुधारवादी कदम उठाये गये हैं। सनद रहे कि वर्ष 1982 में पहली बार केरल के परावुर विधानसभा चुनाव में प्रयोग के तौर पर 50 केंद्रों पर ईवीएम का प्रयोग हुआ था। आयोग द्वारा मतदान प्रक्रिया को सरल करने तथा मतदान केंद्र मतदाता के निवास क्षेत्र के यथा सम्भव निकट बनाने के सराहनीय प्रयास हुए हैं। मतपत्रों से मतदान प्रक्रिया के दौरान न केवल मतपत्र लूटने, बूथ कैप्चरिंग, हत्या एवं लड़ाई-झगड़े की घटनाएं आम हुआ करती थीं बल्कि मतदानकर्मियों को भी ढेर सारे मतपत्र एवं बैलेट बाक्स ढोने पड़ते और मतपत्रों के पृष्ठ भाग में हस्ताक्षर-मोहर करने पड़ते थे जो मानसिक एवं शारीरिक रूप से थकान भरा काम होता था। तब प्रत्येक बूथ पर मतदाता संख्या भी अपेक्षाकृत अधिक हुआ करती थी। अब प्रत्येक बूथ पर मतदाताओं की संख्या कम करते हुए मतदान का समय भी बढ़ाया गया है जिसका सर्वाधिक लाभ बढे हुए मतदान प्रतिशत के रूप में लगातार देखने को मिल रहा है।

आयोग ने प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह सूदूर दक्षिण में समुद्र तटीय एवं द्विपीय स्थान हों या लेह-लद्दाख, कारगिल एवं लाहौल स्पीति जैसे बर्फ की चादर ओढ़े रहने वाले हिमाचल काश्मीरी भू भाग, आंखों की दृष्टि की सीमा से आगे तक फैले रेगिस्तानी प्रदेश हों या फिर सेवन सिस्टर्स के वनवासी रहवास, आयोग ऐसी प्रत्येक जगह मतदान केंद्र तैयार करने में सिद्ध हुआ है। स्मरणीय है कि हिमाचल प्रदेश के लाहौल स्पीति जिले का टशीगंग भारत ही नहीं बल्कि विश्व का सबसे ऊंचाई पर स्थित मतदान केंद्र है। यह समुद्र तल से 15256 फीट (4650 मीटर) की उंचाई पर चीनी सीमा से मात्र 10 किमी अंदर स्थित है, जहां गत लोकसभा निर्वाचन में केवल 49 मतदाता थे। ज्ञातव्य है कि यहां सांस लेने में भी परेशानी होती है।

एक संदर्भ देना समीचीन होगा कि आयोग के दसवें आयुक्त टी.एन. शेषन का छह वर्ष का कार्यकाल चुनाव सुधारों एवं आयोग के संवैधानिक नियमानुकूल सख्त रवैये के लिए जाना जाता है। शेषन ने ही मतदान के लिए मतदाता पहचान पत्र को अनिवार्य किया था और 1996 के चुनावों में पहली बार मतदाता पहचान पत्र का प्रयोग किया गया। कड़ाई से आचार संहिता लागू करने एवं प्रत्याशियों की खर्च सीमा तय करने का भी काम किया। मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान हेतु लुभाने के तमाम प्रलोभनों, प्रचार हेतु धर्म स्थलों के प्रयोग करने पर रोक लगाई। सही मायनों में आमजन तब पहली बार आयोग की शक्ति एवं सामर्थ्य को समझ पाया था।

देश की सर्वोच्च शक्ति संविधान निर्देशित लोकतंत्र में निहित है और सुदृढ़ एवं समर्थ लोकतंत्र का आधार मतदाता हैं, जनता है। वास्तव में राष्ट्रीय मतदाता दिवस लोकतंत्र के प्रति आस्था एवं विश्वास की समृद्धि का पर्व है। कोउ नृप होय हमै का हानी के विरागी भाव से मुक्त होकर प्रत्येक निर्वाचन में मतदाताओं की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित हो, हर काम छोड़कर पहले सपरिवार मतदान फिर जलपान का भाव प्रबल हो, स्वयं तो मतदान करें ही साथ ही मित्र, परिचित एवं पड़ोसियों को भी मतदान हेतु प्रेरित करने का सतत प्रयत्न हो, तभी मतदाता दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

टुकड़ों-टुकड़ों में बँटी कथा की अनगढ़ प्रस्तुति है : हैप्पी पटेल

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

कॉमेडियन वीर दास ने आमिर खान की प्रोडक्शन कम्पनी के बैनर पर एक नई फिल्म बनाई हैं- हैप्पी पटेल- खतरनाक जासूस । फिल्म के शुरुआत में ही वर्ष 1991 के गोवा में गैंगस्टर जिम्मी (आमिर खान) और अन्य दो इंटरनेशनल ब्रिटिश एजेंट्स के बीच मुठभेड़ दिखाई गई है । इस मुठभेड़ में जिम्मी को गोली लग जाती है और एजेंट्स की जान बचाते हुए उनकी काम वाली मर जाती है। काम वाली मरने से पहले दोनों ब्रिटिश एजेंट्स को अपना बच्चा हैप्पी सौंप जाती है, वहीं दूसरी तरफ जिम्मी अपने घर पहुँचकर अपनी बेटी के सामने मर जाता है।

कहानी इसके बाद आठ वर्ष आगे बढ़ जाती है और उसमें कई मोड़ आते हैं और वर्ष 2025 में हैप्पी (वीर दास) बड़ा होकर अपने एजेंट्स पिता जैसा बनना चाहता है पर उसका इंट्रेस्ट कुकिंग और डांसिंग में ज्यादा है। दूसरी तरफ जिम्मी की बेटी मामा (मोना सिंह) बड़ी होकर गोवा के एक इलाके की डॉन बन चुकी है। मामा अपने कई अवैध धंधों के बीच एक देसी फेयरनेस क्रीम भी मार्केट में उतारना चाहती है जिससे वह अंग्रेजों की फेयरनेस क्रीम को टक्कर दे सके। इस क्रीम को बनाने के लिए मामा ने एक अंग्रेज साइंटिस्ट को कैद कर रखा है, जिसे बचाने के मिशन पर खतरनाक जासूस हैप्पी पटेल,वापस गोवा आता है। इस मिशन में हैप्पी की मदद गोवा में उसका लोकल कोऑर्डिनेटर गीत (शारिब हाशमी), रॉक्सी (सृष्टि तावड़े) और डांसर रूपा (मिथिला पालकर) करते हैं। इसप्रकार कहानी कुल मिलाकर भानुमती के कुनबे जुड़ने जैसी हो जाती है ।

फिल्म की कहानी सुनने में तो अच्छी लगती है पर इसे देखते वक्त ऐसा लगता है जैसे कोई टुकड़ों में बेवजह ही आपको हँसाने का प्रयास कर रहा हो। हैप्पी बने वीर दास खुद को हिन्दी में कमजोर बताकर बार-बार द्विअर्थी शब्दों का इस्तेमाल करते हैं और यह अन्त तक जारी रहता है। कुछ सीन बेहतर हैं, एक-दो जगह हँसी भी आती है पर दो घण्टे की फिल्म में इतना काफी नहीं। फिल्म में थोड़ा सस्पेंस हैं, ढेर सारा ड्रामा है और रोमांस भी है। कुल मिलाकर इसमें तर्क छोड़कर सब कुछ है।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है फिल्म के पहले सीन से लेकर आखिरी सीन तक सभी कलाकार ओवरएक्टिंग ही करते दिखते हैं। मैडकैप जोनर की इस फिल्म में कलाकारों से यही उम्मीद थी। आमिर खान बमुश्किल चार सीन के लिए हैं और उनकी ओवरएक्टिंग कतई बर्दाश्त नहीं होती। वीर दास कुछ सीन में बेहतर हैं पर उनका किरदार हैप्पी करने के बजाय दुखी करता है। मिथिला पालकर ने एक बार फिर अपना टैलेंट ज़ाया किया है। शारिब हाशमी ने ठीक-ठाक कॉमेडी की है। मोना सिंह से न तो डर लगता है और न ही उन्हें देखकर हंसी आती है। उनसे जिस तरह की उम्मीद थी, वैसे उनका किरदार बनाया ही नहीं गया। कुल मिलाकर अभिनय तब अच्छा होता जब कलाकारों को कुछ अच्छा करने के लिए दिया जाता।

वीर दास ने इस फिल्म से निर्देशक के रुप में पदार्पण किया है । अपने निर्देशन में उन्होंने कुछ अलग करने की कोशिश भी की? है। उन्होंने कुछ अच्छे कटाक्ष भी किये हैं पर कुल मिलाकर वो इस बात पर गौर करना भूल गए कि ये कहानी भेजा फ्राई कर रही है। न तो वो इसे - ' देली बेली बना पाए और न ही गो गोवा गोन । यह फिल्म भद्दे अन्दाज़ में अंग्रेजी बोलने वाली और द्विअर्थी चुटकुलों पर बिना दिमाग का इस्तेमाल किए हँसने वाले दर्शकों के लिए है। अगर आप खुद को वैसा पाते हैं तो यह फिल्म जाकर देखिए और बीच-बीच में आए हल्के सोशियो पॉलिटिकल कटाक्ष पर वाह-वाह करिये ।

मां नर्मदा प्रकटोत्सव पर विशेष

राजेश शर्मा
सीनियर जर्नलिस्ट

मां नर्मदा की सेवा में समर्पित एक सच्चे साधक- पर्यावरणविद् सचिन दवे

माँ नर्मदा केवल एक नदी नहीं, बल्कि मध्य भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक आस्था का केंद्र है। देश के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश की जीवन रेखा अर्थात लाइफ लाइन हैं।मां नर्मदा के मूल स्वरूप को संवारने और मां नर्मदा को प्रदूषण मुक्त करने के प्रयास में एक सच्चे साधक की भांति 22 वर्षो से तपस्यारत है पर्यावरणविद् सचिन दवे।

सचिन दवे 22 वर्षों तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में विभिन्न दायित्वों पर रहे तथा पिछले 26 वर्षों से शिक्षा और पर्यावरण क्षेत्र में सक्रिय हैं, वर्ष 2013 से माँ नर्मदा के संरक्षण हेतु नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) में प्रभावी भूमिका निभाई है। पर्यावरणविद् दवे ने वर्ष 2013 में माँ नर्मदा के संरक्षण के लिए संघर्ष के बजाय रचनात्मक, कानूनी और समाधान-आधारित मार्ग को अपनाया।

माँ नर्मदा अध्ययन यात्रा (2013)

अमरकंटक से भरूच तक (2158 किमी),

32 विद्यार्थियों का दल लेकर नर्मदा से जुड़ी वास्तविक समस्याओं का प्रत्यक्ष अध्ययन किया।

अध्ययन के विषय-

जल व मृदा प्रदूषण, घाटों की स्थिति, बाढ़ प्रभाव, वन व जैव विविधता, विस्थापन, जनजातीय जीवन, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और बाँधों का पर्यावरणीय प्रभाव।

ह्लत्र्ञ्ज में याचिका : तथ्य आधारित पहल

अध्ययन से प्राप्त ठोस तथ्यों के आधार पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (ह्लत्र्ञ्ज) में याचिका दायर की गई, जिसमें 48 पक्षकारों (केंद्र, राज्य, नगर निगम आदि) को नोटिस जारी हुए। लगभग 8 वर्षों की न्यायिक प्रक्रिया के बाद मापनीय और व्यावहारिक निर्देश सामने आए।

ठोस परिणाम-

इसके सकारात्मक परिणाम सामने आये जो सामने दिखाई भी देने लगे है, प्रमुख रूप से - नर्मदा के ,' श्रेणी जल वाले घाटः 7 से बढ़कर 52 हुए, 28 प्रमुख प्रदूषण स्त्रोतों की पहचान करके उनके निराकरण के प्रयास प्रगतिरत, ?4000 करोड़ की पर्यावरणीय परियोजनाएँ, 29 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट कार्य पूर्ण या प्रगति पर, रासायनिक खाद व रेत खनन पर नियंत्रण, 30,000 शौचालय निर्माण करने से प्रदूषण पर नियंत्रण, बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण एवं मिट्टी क्षरण रोकने की विशेष परियोजनाएँ संचालित हो रही है। सचिन दवे की प्रेरणा से मध्यप्रदेश व गुजरात के 19 जिलों में 58 घाटों पर युवाओं की टीमें निरंतर कार्य कर रही हैं। इनके प्रयासों में घाट सफाई, पौधारोपण , साइकिल रैलियाँ और जनजागरण अभियान शामिल हैं।

राष्ट्रीय व वैश्विक पहचान-

माँ नर्मदा को प्रदूषण मुक्त व अविरल बनाने के इस रचनात्मक आंदोलन का उल्लेख ऋस्स के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर द्वारा लिखित पुस्तक 'ऋस्स - ऋशड्डस्रद्बड्डश्चह्य द्घशह्म् ह्लद्धद्ग 21ह्यह्ल ष्टद्गठ्ठह्लह्वह्म्4' में किया गया है, जो विश्वभर में चर्चित हुई। दवे की माँ नर्मदा के संरक्षण की यह यात्रा बताती है कि सकारात्मक दृष्टि और निरंतर प्रयास से पर्यावरण संरक्षण और विकास एक साथ संभव हैं।

नरवाई प्रबंधन के नाम पर बड़ा खेल, सरकार की मंशा पर लग रहा पलीता

खेतों से मुफ्त बटोर रहे गन्ने की पत्तियां, भूमि को नहीं मिल पाएगी जैविक खाद

एस. के. द्विवेदी

बैतूल। एक तरफ सरकार खेतों में नरवाई जलाने पर पाबंदी लगाकर किसानों को फसल के अवशेष से जैविक खाद बनाने और भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन दे रही है, तो वहीं दूसरी ओर बैतूल जिले में एक कंपनी के द्वारा किसानों के खेतों से गन्ने की सूखी पत्तियां बटोरने का काम किया जा रहा है। इससे खेतों में सूखी पत्तियां ही शेष नहीं रहती हैं, जिससे न तो जैविक खाद बन पाएगी और न ही जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी। उन्नत किसानों की मानें तो किसान गन्ने की सूखी पत्तियों को मल्चर की मदद से बारीक कर मिट्टी में मिला देते थे, जिससे वह सडने के बाद जैविक खाद में बदल जाती थी और किसानों को फसलों से बेहतर पैदावार मिल जाती थी। अब निजी कंपनी के द्वारा किसानों को मुफ्त में खेत साफ कर देने का लालच दिखाकर गन्ने की पत्तियों को बटोरकर बंडल बनाने का काम किया जा रहा है। कंपनी के द्वारा जिले के गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर यह कार्य प्रारंभ किया गया है और जगह-जगह गन्ने की पत्तियों के बंडल जमा कर रखे गए हैं।

बंडलों में आग लगने की हो रही घटनाएं – पत्तियों के इन बंडलों में आग लगने की घटनाएं भी होने लगी हैं। गत दिवस मुलताई तहसील के ग्राम साईंखेड़ा में राहुल साहू के खेत में तथा गोलू मांकोड़े के घर के समीप रखे सूखी पत्तियों के बंडल में

आग लग गई। घटना को लेकर ग्रामीणों ने प्रशासन को शिकायत दर्ज कराई है। बताया जा रहा है गन्ने का कचरा एक कंपनी द्वारा स्टाक किया गया था। हैरानी की बात है कि घटना के बाद कंपनी का कोई भी कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचा। आग इतनी तेजी से फैल रही थी कि आसपास के घरों और खेतों को नुकसान पहुंचने का खतरा बन गया था। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि यदि कोई कंपनी, गांव या निजी भूमि पर ज्वलनशील कचरा या डस्ट रखती है, तो उसकी सुरक्षा, निगरानी और नियमित निरीक्षण की पूरी जिम्मेदारी कंपनी की हो।

शुगर मिल के प्रयास से सुधर रहीं जमीनें – जिले में गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में शुगर मिलों के प्रबंधन की ओर से अनुदान पर गन्ने की सूखी पत्तियों को मल्चिंग करने वाले उपकरण दिलाए गए हैं। वहीं किसानों को खेतों में आग लगाने की बजाय मल्चिंग कराने पर शुगर मिलों के द्वारा किराए में 50 प्रतिशत की छूट भी दी जाती है। इसका ही नतीजा है कि पिछले करीब पांच वर्ष से जिले के गन्ना उत्पादक किसान कटाई के बाद गन्ने के खेतों में अवशेषों को आग के हवाले न करते हुए मल्चिंग कर जैविक खाद के लिए बिखरा रहे हैं।

कृषि एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को भी क्षति – जागरूक किसानों का कहना है कि निजी कंपनियों के द्वारा गन्ने की सूखी पत्ती का संग्रह किया जाना न केवल किसानों के हितों के विरुद्ध है, बल्कि शासन द्वारा प्रोत्साहित सतत कृषि और पर्यावरण संरक्षण प्रयासों को भी सीधी क्षति पहुंचा रहा है। इससे मिट्टी की उर्वरता, जैविक कार्बन स्तर और जल संरक्षण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। किसानों ने प्रशासन से मांग की है कि मामले की गंभीरता को देखते हुए संबंधित कंपनियों व एजेंसियों की गतिविधियों की जांच कराई जाए और किसानों को क्षति पहुंचाने वाली गतिविधियों को रोकने के लिए आवश्यक प्रशासनिक आदेश जारी किए जाएं।

एक हेक्टेयर में बनती है पांच टन जैविक खाद- जिले में जैविक खेती कर गन्ने की फसल लगाने वाले किसानों का मानना है कि एक हेक्टेयर खेत से 8-10 टन सूखे पत्ते उपलब्ध होते हैं। इन्हें मल्चिंग कर खेत की मिट्टी में मिलाने से 5 टन के करीब जैविक खाद प्राप्त होता है। इससे फसल में पोषक तत्वों की कमी नहीं होती है और पैदावार भी बढ़ती है। लेकिन कंपनी किसानों को उनके हित का लालच देकर खेतों से गन्ने की सूखी पत्तियां बटोरने का काम कर रही है। इससे खेतों में सूखी पत्तियां ही शेष नहीं रहती हैं, जिससे न तो जैविक खाद बन पा रही है और न ही जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी। जिससे किसानों को फसलों के उत्पादन के लिए अलग से खाद की व्यवस्था करनी पड़ेगी। जिसके लिए किसानों को आर्थिक खर्च भी करना पड़ेगा।

इनका कहना है -

हमारे द्वारा किसानों को नरवाई जलाने से रोकने के प्रयास किए जा रहे हैं। नरवाई जलाने से जहां प्रदूषण बढ़ता है, वही मिट्टी की उपजाऊ क्षमता पर भी असर पड़ता है। ऐसे किसान स्वेच्छा से वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में गन्ने की पत्तियों का बेलर बनवा सकते हैं। किसान की सहमति से ही गन्ने की पत्तियों का उठाव किया जा रहा है। यदि किसान मल्चिंग करवा सकता हैं, तो यह खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए ज्यादा बेहतर है, लेकिन सभी किसान ऐसा नहीं करा पाते हैं।

- आनंद बड़ोनिया, उपसंचालक, कृषि विभाग बैतूल

बाल मन में राम 'को समर्पित नन्हे मुन्ने छात्रों ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में

हीरालाल गोलानी, सोहागपुर

सरस्वती शिशु मंदिर में शारीरिक प्रकटोत्सव एवं शिशु नगरी सांस्कृतिक कार्यक्रम 'बाल मन में राम 'का आयोजन नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल,जिला शिक्षा अधिकारी एल. एन. प्रजापति, विभाग प्रचारक नरेन्द्र यादव, विभाग समन्वयक नर्मदापुरम सौरव उपाध्यक्ष, समाजसेवी कन्नूलाल अग्रवाल, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस शिक्षा समिति अध्यक्ष कृष्णा पालीवाल आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ।कार्यक्रम के प्रारंभ में मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

सरस्वती वंदना के उपरांत अतिथियों का स्वागत किया । व्यवस्थापक संजय दुबे ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किय। विभाग समन्वयक नर्मदापुरम विभाग सौरव उपाध्याय ने विद्या भारती के लक्ष्य से परिचित कराते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया। मातृशक्ति की भारी संख्या में उपस्थिति से गदगद होकर अपने कहा कि 5 से 10 वर्ष की आयु में बच्चों की इंद्रियों का विकास तेजी से होता है। बच्चों का मानसिक विकास जो उसकी मातृभाषा में सरलता से होता है । बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए माताएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। माताएं अपने बच्चों को संस्कार पक्ष को मजबूत कर सकती हैं। बड़ों का सम्मान करना, मोबाइल का उपयोग कितना करना, पढ़ाई एवं अन्य गतिविधियों पर ध्यान देकर बच्चे के सर्वांगीण विकास में योगदान दे सकती हैं। विद्यालय द्वारा बच्चों के सर्वांगीण सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किए जाते हैं ।जिसमें आपके सहयोग की अपेक्षा की जाती है ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की बेला में सर्वप्रथम शारीरिक प्रकटोत्सव का कार्यक्रम रखा गया । योग व्यायाम की विभिन्न प्रस्तुतियां भैया बहनों ने की । बाल मन में राम भैया बहनों ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच

कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। जिसमें द्वापर युग ,सतयुग, त्रेतायुग एवं कलयुग पर आधारित कार्यक्रम, सीता स्वयंवर, आज अवध सजाएंगे। हनुमान जी की सेना चली, छम छम नाचे वीर हनुमाना, केसरी के लाल, सीता हरण, राम रावण युद्ध, लव कुश संवाद, मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरा मोती आदि विषय पर कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई।

इस अवसर पर नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल, नगर परिषद उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी, पार्षद आशीष विश्वकर्मा, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राकेश कुमार उईके, बीआरसी राकेश रघुवंशी, प्राचार्य रामकिशोर दुबे, जनशिक्षक राजेश दीक्षित ,भार्गव जी , तिवारी जी , व्यवस्थापक संजीव दुबे, उपाध्यक्ष राजा भैया पटेल, सचिव देवराज पटेल, कोषाध्यक्ष अभिषेक जैन, समाजसेवी विशाल गोलानी,सौरभ सोनी, नीलेश खण्डेलवाल , नितिन सूर्यवंशी, रीतेश सिंह, अभिषेक चौहान अभिभावकगण , गणमान्य नागरिक आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अंजली पुरोहित एवं रुचि दुबे ने किया ।कार्यक्रम के अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुति करने वाले भैया बहनों को पुरस्कार वितरण किए गए। आभार प्राचार्य अशोक कुमार दुबे ने व्यक्त किया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस

डॉ अशोक कुमार भार्गव
पूर्व आईएएस, मोटिवेशनल स्पीकर

वोट की ताकत हमारा संवैधानिक अधिकार

भारत में सन 1952 से निरंतर एक निश्चित समय अंतराल पर लोकसभा और विधानसभाओं के निर्वाचन संपन्न हो रहे हैं । चुनाव में मतदान का प्रतिशत है यद्यपि अपेक्षाकृत बड़ा है किंतु फिर भी एक बहुत बड़ा तबका अर्थात 30त्न से 35त्न मतदाता आज भी %कोउ नृप होय हमें का हानी%की दूषित मानसिकता के चलते मतदान के प्रति निष्क्रिय, उदासीन और विमुख है । वोट देने की ताकत राष्ट्र के विकास या विनाश की निर्णायक शक्ति होती है । अक्सर वोट न देने वाले मतदाता सरकार की नाकामी पर गरियाते रहते हैं, तर्क, कुतर्क और वितर्क करते रहते हैं । ऐसे ही एक याचिकाकर्ता को आड़े हाथों लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई थी कि अगर आप वोट नहीं देते हैं तो किसी काम के लिए आपके पास सरकार पर तोहमत लगाने का अधिकार भी नहीं है ।

हमें गर्व है कि हम दुनिया के सबसे सशक्त, सफल, परिपक्व लोकतांत्रिक गणराज्य के नागरिक हैं। लोकतंत्र न केवल सर्वोत्तम शासन पद्धति है वरन एक शैली है जीवन यापन की, एक विधि और दर्शन है। इस व्यवस्था में स्वतंत्र निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव लोक आस्था, लोक निष्ठा के प्रतीक होते हैं। चुनाव लोकतंत्र की आत्मा है और मतदाता ही लोकतंत्र के भाग्य विधाता है। चुनाव के बिना लोकतंत्र और लोकतंत्र के बिना चुनाव दोनों अर्थहीन हो जाते हैं। भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार डॉ अंबेडकर ने प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा का सम्मान करते हुए मतदान के अधिकार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। भारतीय संविधान की सबसे बड़ी विलक्षणता ही यह है कि वह देश के प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के न केवल वोट देने की ताकत देता है वरन प्रत्येक वोट का मूल्यांकन भी समान करता है। यह ताकत प्रत्येक मतदाता का न केवल संवैधानिक अधिकार है वरन उसकी जिम्मेदारी भी और जिम्मेदारी सिर्फ ओढ़ने के लिए नहीं होती वरन निभाने के लिए होती है। जो मतदाता अपने इस मूल्यवान अधिकार का उपयोग नहीं करते वे न केवल लोकतंत्र की बुनियाद को कमजोर करते हैं वरन राष्ट्र के भविष्य के साथ खिलवाड़ भी करते हैं।

भारत में सन 1952 से निरंतर एक निश्चित समय अंतराल पर लोकसभा और विधानसभाओं के निर्वाचन संपन्न हो रहे हैं । चुनाव में मतदान का प्रतिशत है यद्यपि अपेक्षाकृत बड़ा है किंतु फिर भी एक बहुत बड़ा तबका अर्थात 30त्न से 35त्न मतदाता आज भी %कोउ नृप होय हमें का हानी%की दूषित मानसिकता के चलते मतदान के प्रति निष्क्रिय, उदासीन और विमुख है। वोट देने की ताकत राष्ट्र के विकास या विनाश की निर्णायक शक्ति होती है। अक्सर वोट न देने वाले मतदाता सरकार की नाकामी पर गरियाते रहते हैं, तर्क, कुतर्क और वितर्क करते रहते हैं। ऐसे ही एक याचिकाकर्ता को आड़े हाथों लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई थी कि अगर आप वोट नहीं देते हैं तो किसी काम के लिए आपके पास सरकार पर तोहमत लगाने का अधिकार भी नहीं है।

इसलिए समावेशी और सहभागी लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत करने के लिए नए मतदाताओं को प्रोत्साहित करना, उन्हें सुविधाएं देना, उनका नामांकन बढ़ाना , उन्हें सशक्त, सतर्क, सुरक्षित और वोट देने के अधिकार के प्रति जागरूक करना अपरिहार्य होता है।

भारत निर्वाचन आयोग ने मतदाताओं को सुव्यवस्थित शिक्षण हेतु कई सामान्य और लक्षित हस्तक्षेपों पर आधारित 360 डिग्री संचार का राष्ट्रव्यापी %स्वीप कार्यक्रम% वर्ष 2009 से प्रारंभ कियाहै। फल स्वरुप मतदान का प्रतिशत बढ़ा है, जेंडर गैप कम हुआ है, मतदान केंद्र पर हिंसा लूट और मतदान के बहिष्कार जैसी घटनाएं कम हुई है, नए युवा मतदाता शत प्रतिशत जुड़ रहे हैं, नामांकन बढ़ रहा है और सूचित, नैतिक, स्वतंत्र प्रोत्साहित वोटिंग प्रत्येक मतदान केंद्र पर बढ़ रही है। यह एक कटु सत्य है कि चुनाव का लोकतांत्रिक अनुष्ठान मतदाताओं के मतों की आहुतियों के बिना फलीभूत नहीं हो सकता क्योंकि लोकतंत्र का स्वरूप वैसा ही होता है जैसे उसके नियंता होते हैं और लोकतंत्र में मतदाता ही लोकतंत्र के असली मालिक और नियंता होते हैं। वे अपनी सरकार, अपने लिए, अपने ही द्वारा चुनते हैं। लोकतंत्र में एक मतदाता का अज्ञान भी सबकी सुरक्षा को संकट में डालने के लिए पर्याप्त होता है। क्योंकि %जम्हूरियत वह तर्जे हुकूमत है कि इसमें बंदों को तोला नहीं गिना करते हैं % अर्थात एक-एक वोट महत्वपूर्ण होता है। एक-एक वोट से हार जीत होती है। यों तो लोकतंत्र में हम लोक कहलाना पसंद करते हैं किंतु तंत्र का हिस्सा नहीं बनते। अतः संविधान प्रदत्त वोट डालने के अपने मूल्यवान अधिकार का हर संभव परिस्थितियों में उपयोग करना चाहिए।

%हम भारत के लोग% भाग्यशाली हैं कि हमें 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के लागू होते ही सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की अनुपम सौगात बिना किसी संघर्ष के प्राप्त हो गई। जबकि, वैश्विक स्तर पर इसे प्राप्त करने का इतिहास आंदोलनों, प्रदर्शनों और संघर्षपूर्ण अभियानों का रहा है।19वीं सदी के प्रारंभ में लोकतंत्र के लिए होने वाले संघर्ष प्रायः राजनीतिक समानता, आजादी और न्याय जैसे मानवीय मूल्यों को लेकर ही होते थे किंतु सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की मांग प्रमुख होती होती थी। यूरोप के अधिकांश देश जो लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाते जा रहे थे वह भी सभी लोगों को वोट देने की अनुमति नहीं देते थे। कुछ देशों में केवल उन्हीं लोगों को वोट देने का अधिकार था जिनके पास संपत्ति थी या वे बड़े जमींदार, सामंत अथवा पादरी थे। महिलाओं के साथ भेदभाव होता था और वोट देने का अधिकार मिलता ही नहीं था। संयुक्त राज्य अमेरिका में अश्वेतों को 1965 तक मतदान का अधिकार नहीं मिला। कई देशों में मताधिकार को प्राप्त करने के लिए साक्षरता की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य होता था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान महिलाओं ने कारखाने और अन्य क्षेत्रों में अपनी निर्णायक भूमिका से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और युद्ध के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया था जिससे यह धारणा विकसित हुई कि महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिलना ही चाहिए। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र ने भी महिलाओं के मताधिकार को प्रोत्साहित किया।1950 के बाद धीरे-धीरे अर्जेंटीना, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, यूनान, स्पेन आदि देशों के नागरिकों को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्राप्त हुए।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव संबंधी बड़े रोचक तथ्य भी %इंस्टिट्यूट ऑफ़ डेमोक्रेसी एंड इलेक्टोरल असिस्टेंट% के प्रतिवेदन में मिलते हैं। विश्व के अनेक देशों जैसे बेल्जियम, स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया और बोलीविया आदि देशों में मतदान करना अनिवार्य है। भारत सहित फिलीपींस, थाईलैंड जैसे देशों में मतदान करना केवल नागरिक कर्त्तव्य है बाध्यता नहीं। जबकि कई देश ऐसे हैं जहां इस कर्तव्य के पालन न करने पर सजा का प्रावधान है। मतदान की अनिवार्यता लागू करने वाले देशों में से 19 ऐसे देश हैं जहां इस नियम को तोड़ने पर सजा भी दी जाती है। जिन देशों में मतदान अनिवार्य है वहां 70 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए यह बाध्यता नहीं है। आस्ट्रेलिया, ब्राजील जैसे देशों में मतदान न करने पर अनुपस्थिति का कारण सहित औचित्य प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होता है।अर्जेंटीना में तो पुलिस के पास इस बात का प्रमाण पत्र जमा करना होता है कि मतदान के दिन आप वास्तव में कहां थे। पेरू और ग्रीस जैसे देशों में मतदान न करने वाले व्यक्ति को सार्वजनिक सेवाओं से वंचित कर दिया जाता है। बोलीविया में वोट न देने वाले का तीन माह का वेतन तक रोक दिया जाता है। भारत में यद्यपि मतदान संवैधानिक कर्तव्य है बाध्यता नहीं किंतु फिर भी यह हमारा मूल्यवान लोकतांत्रिक कर्तव्य है।

वैसे तो चुनाव की चुनौती व्यक्ति के जीवन में हर क्षण उपस्थिति रहती है। बाजार से फल, गहने, कपड़े, अन्य वस्तु,सब्जी भाजी या मिट्टी का घड़ा ही क्यों ना खरीदना हो अथवा वैवाहिक रिश्ता तय करना हो तब हम बहुत ठोक बजाकर सम्यक चुनाव करते हैं।जब हम अपने जीवन के निर्णय बहुत सोच समझ कर लेते हैं तब हमें इतने बड़े राष्ट्र की बागडोर जिन्हें सौंप रहे हैं उन्हें चुनते वक्त बिना किसी जाति धर्म भेद किए, वोटों के महा ठगों के मायावी वादों,लालच, प्रलोभन आदि से निर्लिप्त रहकर दूध का दूध और पानी का पानी करते हुए विवेक सम्मत मतदान करना चाहिए। हमें ऐसे श्रेष्ठ जन प्रतिनिधि चुनने चाहिए जो वास्तव में नैतिक मूल्यों राष्ट्रीय आदर्शों, सदाचार, ईमानदारी, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति की उदात्त चेतना के पोषक हों। क्योंकि, भारतीय चुनावों का महात्म्य किसी महाकुंभ से कम नहीं होता। ये केवल बहुरंगी, बहुआयामी, भव्य और विराट ही नहीं होते वरन चुनौतीपूर्ण भी होते हैं जिसकी इंद्रधनुषी छटाओं में हमारी जीवटता, उम्मीदें और उत्साह के साथ ही हमारी भौगोलिक, सामाजिक,सांस्कृतिक, भाषायी,जातिगत विविधता और जन-जन की आकांक्षाओं का स्वर्णिम भविष्य भी दिखाई देता है। इसलिए सारे काम छोड़ दो सबसे पहले वोट दो।

'बिग बॉस' की रनर अप बनने का किस्सा

रियलिटी शो 'बिग बॉस-19' की कंटेस्टेंट फरहाना भट्ट इस बार फिनाले के मंच पर गौरव खन्ना के साथ पहुंची थी, लेकिन जीत नहीं सकी। उनके यहां तक पहुंचने पर दर्शकों को आश्चर्य भी हुआ। क्योंकि, शो में उनका काम सिवाय झगड़े और विवाद करने के और कुछ नहीं रहा। इसके बावजूद उनका अंतिम दो कंटेस्टेंट में पहुंचने ने दर्शकों चौंकाया भी। अब ये राज खुला कि फरहाना रनर अप के काबिल नहीं थी, उन्हें तो जबरन यहां तक लाया गया था।

बिग बॉस-19' मेकर्स के साथ फरहाना भट्ट के रिश्ते का पर्दाफाश हो गया। रनर-अप रहीं फरहाना भट्ट के बारे में चौंकाने वाला दावा किया जा रहा है। उन्हें एक शख्स ने उन्हें एक्सपोज किया। साथ ही कई फोटो और वीडियो इंटरनेट पर वायरल हो रहे हैं, जिसमें वह बिग बॉस क्रिएटिव टीम के सदस्यों के साथ नजर आ रही हैं और इससे उनकी दोस्ती के बारे में जानकर लोग उनकी आलोचना कर रहे हैं। साथ ही शो के एक कंटेस्टेंट बशीर अली के एविक्शन के लिए भी फरहाना की टीम को जिम्मेदार ठहराया जा रहा हैं।

'बिग बॉस' के मेकर्स एंडेमॉल शाइन इंडिया के पूर्व सीनियर क्रिएटिव भास्कर भट्ट, फरहाना के करीबी दोस्त हैं। जिनके रिश्ते के बारे में पहले भी कई दावे हुए थे। अब एक सोशल मीडिया यूजर ने एक ऑडियो क्लिप शेयर की, जिसमें कथित तौर पर क्रिएटिव टीम को फरहाना की साइड स्टोरी को प्रमोट करने और दूसरे कंटेस्टेंट्स को नीचा दिखाते हुए दिखाया गया। बशीर के एविक्शन के लिए भी एक्ट्रेस को जिम्मेदार बताया गया है। यूजर ने लिखा कि सच कभी नहीं छिप सकता। आज सभी जानते हैं कि फरहाना भट्ट का एंडेमॉल क्रिएटिव टीम से तगड़ा कनेक्शन है। उन्होंने सब कुछ प्लान किया और दूसरे कंटेस्टेंट्स की इज्जत को मिट्टी में मिला दिया। फरहाना के एक्स साथी यश ने उन्हें सबूत के साथ एक्ट्रेस का पर्दाफाश किया है।

फरहाना की टीम का बयान- फरहाना की टीम 'यंग फिल्मिस्तान' ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए एक बयान जारी किया है, जिसमें बताया गया कि एक फैन से एक कर्मचारी बनने तक, मदद मांगने से लेकर मुंबई आने और फरजाना भट्ट के लिए पीआर के तौर पर काम करने और उनको सपोर्ट करने तक, इस इंसान पर फरहाना और उसकी पूरी टीम ने भरोसा किया। उसका साथ दिया और कई मौके भी दिए। उस भरोसे का बदला इसने धोखा देकर चुकाया है।

पूर्व कर्मचारी का आरोप- यश ने कई स्क्रीनशॉट्स शेयर किए, जिनमें कथित तौर पर बताया था कि 'बिग बॉस' की क्रिएटिव टीम में मौजूद फरहाना के दोस्तों ने ऑनलाइन उनके फेवर में माहौल बनाया। जिससे उन्हें रनर-अप बनने का मौका मिला। एक्स कर्मचारी यश ने ये भी दावा किया कि आदिल सईद नाम का शख्स 'बिग बॉस' की क्रिएटिव टीम में था। इसलिए वह कैमरे के सामने आने पर मास्क लगा लेते और चेहरा छिपाता था। यश के मुताबिक, आदिल एक्ट्रेस की टीम 'यंग फिल्मिस्तान' के ओनर भी हैं। पूर्व कर्मचारी ने आगे ये भी आरोप लगाया कि एक्ट्रेस और उनकी टीम उनका बकाया नहीं चुका पाई। वह सोशल मीडिया मैनेजर और पीआर एसोसिएट के तौर पर काम करते थे। हालांकि इन आरोपों पर फरहाना का कोई बयान नहीं आया है।

रियल बॉक्स

संविधान, लोकतंत्र, राष्ट्र प्रेम और हिंदी सिनेमा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

गणतंत्र दिवस भारत का वह पर्व है, जब 1950 में संविधान लागू हुआ और देश ने पूर्ण संप्रभुता प्राप्त की। यह दिवस हिंदी सिनेमा का प्रिय विषय रहा है, जो संविधान, लोकतंत्र और राष्ट्र प्रेम को जोड़ता है। ये फिल्में न केवल मनोरंजन देती हैं, बल्कि सामाजिक जागरूकता भी पैदा करती हैं। हिंदी सिनेमा ने इस थीम को देशभक्ति फिल्मों के माध्यम से जीवंत किया, जहां युद्ध, स्वतंत्रता संग्राम और संवैधानिक न्याय की कहानियां युवाओं को प्रेरित करती हैं। इन फिल्मों के कथानक दर्शाते हैं कि फिल्म इंडस्ट्री ने गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में कैसे स्थापित किया। ये फिल्में गणतंत्र दिवस को केवल छुट्टी का दिन नहीं, बल्कि संवैधानिक जागरूकता का माध्यम बनाती हैं। इन फिल्मों ने सैन्य वीरता से लेकर सामाजिक न्याय तक, हिंदी सिनेमा के राष्ट्र प्रेम को जीवंत रखा। दर्शक इसके माध्यम से कर्तव्य पालन की प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। ऐसी फ़िल्में सिर्फ उपदेश के जरिए राष्ट्र प्रेम की बातें नहीं करती, बल्कि इनके कथानक इतने सशक्त रहे कि फिल्म देखते हुए दर्शकों के रोंगटे खड़े हो गए।

जेपी दत्ता की फिल्म 'बॉर्डर' सीमा पर बलिदान की गाथा वाली कहानी है। 1971 के भारत-पाक युद्ध की लोंगेवाला लड़ाई पर आधारित है, जहां 120 सैनिकों ने 2000 पाकिस्तानी टैंकों का मुकाबला किया। सनी देओल का मेजर कुलदीप सिंह चंदपुरी का किरदार सैनिकों की वीरता का प्रतीक है, जबकि सुनील शेट्टी और अक्षय खन्ना जैसे कलाकार सहयोगी भूमिकाओं में जान डालते हैं। फिल्म का संगीत, खासकर 'संदेशे आते हैं' भावुकता जगाता है। फिल्म यह सच भी सामने आता है, कि 'बॉर्डर' युद्ध की क्रूरता दिखाते हुए सैनिकों के पारिवारिक बलिदान को उजागर करती है। गणतंत्र दिवस के संदर्भ में यह संविधान द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय सुरक्षा के कर्तव्य को रेखांकित करती है। बॉलीवुड ने पहली बार इतने बड़े कैनवास पर वास्तविक घटना को चित्रित किया, जिससे दर्शकों में देशभक्ति की लहर दौड़ी। फिल्म की कमजोरी रोमांस का अतिरिक्त डोज है, लेकिन इसका प्रभाव आज भी बरकरार है। यह युद्ध की भयावहता दिखाते हुए सैनिकों के त्याग को उजागर करती है, जिससे दर्शक में राष्ट्रप्रेम जागृत हो। गणतंत्र दिवस पर यह फिल्म सशस्त्र बलों के संवैधानिक कर्तव्य को याद दिलाती है।

2006 में आयी फिल्म 'रंग दे बसंती' युवाओं के क्रांतिकारी जागरण का प्रतीक है। राकेश ओमप्रकाश मेहरा की यह फिल्म 26 जनवरी 2006 को रिलीज हुई, जो स्वतंत्रता संग्राम के नायकों को आधुनिक युवाओं से जोड़ती है। आमिर खान, सिद्धार्थ, शरमन जोशी और तब्बू जैसे कलाकार ब्रिटिश काल के भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद से प्रेरित होकर भ्रष्टाचार के खिलाफ हथियार उठाते हैं। सूजन (अलीजा लैहानी) का डॉक्यूमेंट्री बनाना कथानक का टर्निंग पॉइंट है। फिल्म संविधान के मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 19-21) की रक्षा का आह्वान करती है, जहां निष्क्रिय नागरिकता से सक्रिय प्रतिरोध की ओर बढ़ाव है। 'रंग दे बसंती' ने युवाओं को वोटिंग और सामाजिक मुद्दों पर जागरूक किया। इसका क्लाइमेक्स, जहां युवा मंत्री की हत्या करते हैं, नैतिक दुविधा पैदा करता है। लेकिन, राष्ट्र प्रेम को प्राथमिकता देता है। गणतंत्र दिवस थीम की यह फिल्म संविधान के मौलिक अधिकारों की रक्षा का संदेश देती है, युवाओं को कर्तव्यनिष्ठ बनाते हुए।

लगान (2001) वास्तव में एकता का सामूहिक संग्राम है। ब्रिटिश काल में किसानों की क्रिकेट से आजादी की लड़ाई दिखाती है। आशुतोष गोवारीकर के निर्देशन में बनी यह फिल्म गांव की एकता को संविधान पूर्व की आजादी की भावना से जोड़ती है। पता चलता है कि यह सामाजिक समानता और सामूहिक संघर्ष पर जोर देती है, जो गणतंत्र दिवस के

लोकतांत्रिक मूल्यों से मेल खाता है। फिल्म में 1893 के चंपानेर गांव का कथानक है, जहां भुवन (आमिर खान) ब्रिटिश कप्तान रसेल के टैक्स से क्रिकेट मैच द्वारा मुक्ति दिलाता है। ग्रेसी (रेचेल शेफर) और एलिजाबेथ (सुप्रिया पाठक) जैसे सहयोगी सामाजिक एकता दिखाते हैं। फिल्म का संगीत एआर रहमान कालजयी है। विश्लेषण में यह संविधान पूर्व की स्वतंत्रता भावना को प्रतिबिंबित करती है, जहां जाति-धर्म भूलकर हिंदू-मुस्लिम एकजुट होते हैं। गणतंत्र दिवस थीम में 'लगान' एकता और अखंडता को मजबूत करती है। इस फिल्म की कमजोरी लंबाई है, लेकिन ऑस्कर नॉमिनेशन ने इसे वैश्विक बनाया। यह दर्शाती है कि कमजोर भी संगठित होकर साम्राज्यवाद हरा सकता है।

'आर्टिकल 15' (2019) जाति के विरुद्ध न्याय युद्ध का उद्घोष करती है। अनुभव सिन्हा की यह फिल्म उत्तर प्रदेश के लालगांव में आईपीएस अधिकारी अयान रंजन (आयुष्मान खुराना) की दलित लड़कियों के अपराध की जांच पर आधारित है। संविधान के अनुच्छेद 15 पर आधारित यह फिल्म अस्पृश्यता और असमानता को चुनौती देती है। यह फिल्म दर्शाती है, कि लोकतंत्र में न्यायपालिका और प्रशासन कैसे संवैधानिक अधिकार सुनिश्चित करते हैं। गणतंत्र दिवस पर यह फिल्म समानता के सिद्धांत को मजबूत करती है और सामाजिक सुधार की प्रेरणा देती हुई। सयानी गुप्ता और कुमुद मिश्रा सहायक भूमिकाओं में हैं। फिल्म संविधान के अनुच्छेद 15 (भेदभाव निषेध) पर केंद्रित है। विश्लेषण बताता है कि यह कास्ट सिस्टम की जड़ों को कुरेदती है, वह भी प्रशासनिक भ्रष्टाचार उजागर करते हुए। गणतंत्र दिवस पर समानता के सिद्धांत को भी पुनर्जीवित करती है। क्लाइमेक्स में न्याय की जीत वास्तव में प्रेरणादायक है।

आदित्य सुहास जांभले निर्देशित 'आर्टिकल 370' यामी गौतम की भूमिका में कश्मीर के विशेष दर्जे को समाप्त करने की घटना पर आधारित है। फिल्म भ्रष्टाचार और अलगाववाद के खिलाफ राष्ट्रीय एकता दिखाती है। विश्लेषण बताता है कि यह संविधान की एकात्मकता को मजबूत करने वाली पॉलिटिकल थ्रिलर है, जो गणतंत्र दिवस के संप्रभुता थीम से जुड़ती है। क्लाइमेक्स में शांतिपूर्ण निरस्तीकरण राष्ट्रीय अखंडता का संदेश देता है। शेखर कपूर की डॉक्यू-ड्रामा सीरीज 'संविधानः द मेकिंग ऑफ द कॉन्स्टिट्यूशन' (2014) संविधान निर्माण की कहानी है, जो इस बहस को जीवंत करती है। यह फिल्म डॉ बीआर अम्बेडकर और अन्य नेताओं के योगदान को दिखाती है। यह गणतंत्र दिवस का मूल स्रोत स्पष्ट करती है, विविधता को एकता में बदलने की प्रक्रिया उजागर करते हुए। यह श्रृंखला संवैधानिक लोकतंत्र की नींव समझाती है।

2007 में आई शाहरुख खान की 'चक दे इंडिया' महिला हॉकी टीम की विश्व कप विजय की कहानी है। शिमित अमीन की फिल्म में शाहरुख खान कोच कबीर खान के रूप में 16 लड़कियों की हॉकी टीम को विश्व कप दिलाते हैं। यह फिल्म क्षेत्रीय विभेदों को पार कर एकजुटता दिखाती है, जो संविधान की प्रस्तावना से प्रेरित है। विश्लेषण में कोच कबीर खान का किरदार राष्ट्र निर्माण का प्रतीक बनता है। गणतंत्र दिवस पर यह खेल के माध्यम से समान अवसरों का संदेश देती है। ऐसे ही खेल आधारित फिल्म 'भाग मिल्खा भाग' (2013) में व्यक्तिगत संघर्ष से राष्ट्रीय गौरव की थीम है। राकेश ओमप्रकाश मेहरा की यह फिल्म धावक मिल्खा सिंह के जीवन पर बनी है। फरहान अख्तर का अभिनय विभाजन के दर्द से ओलंपिक सफलता तक ले जाता है। यह फिल्म देश निष्ठा और आत्मविश्वास को गणतंत्र मूल्यों से जोड़ती है। फिल्म प्रेरणा देती है कि कठिनाइयों से लक्ष्य प्राप्ति संभव है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'मर्दानी-3' का नया ट्रैक, याद आई 'बब्बर शेरनी'

यश राज फिल्म्स की रानी मुखर्जी की फिल्म मर्दानी-3 इसी महीने 30 जनवरी को रिलीज होने वाली है। इस फिल्म की तीसरी किस्त में रानी फिर दमदार, निडर और जांबाज पुलिस अधिकारी शिवानी शिवाजी रॉय के रूप में वापसी कर रही हैं। वे एक क्रूर सामाजिक अपराध के खिलाफ मोर्चा संभालती नज़र आएंगी। 93 लापता लड़कियों को बचाने की इस कहानी को लेकर दर्शकों में उत्सुकता है।

इस बीच यश राज फिल्म्स ने एक नया गीत रिलीज किया, जो रानी मुखर्जी की पावर-पैक मौजूदगी का जश्न मनाता है। 'बब्बर शेरनी' शीर्षक से आया यह गीत शिवानी की प्रभावशाली आभा को और मजबूत करता है। इस गीत को सार्थक कल्याणी ने कंपोज़, प्रोड्यूस और अरेंज किया और बोल श्रुति शुक्ला ने लिखे हैं। गीत के बारे में रानी मुखर्जी ने कहा कि 'बब्बर शेरनी' फिल्म की आत्मा का एक सशक्त रूप है। यह मर्दानी की अडिग भावना को पूरी ताकत के साथ दर्शाता है और हमारे समाज की महिलाओं को 'बब्बर शेरनी' के रूप में सम्मानित करता है। यह गीत कच्ची सच्चाई, दृढ़ संकल्प और अडिग साहस से भरा हुआ है ठीक वैसे ही जैसे शिवानी शिवाजी रॉय का व्यक्तित्व। 'बब्बर शेरनी' एक महिला की ताकत, उसके संकल्प और समाज में बदलाव लाने की उसकी जिद को सलाम है। न्याय की अडिग भावना से प्रेरित यह गीत उनकी निडरता और फौलादी इरादों को दर्शाता है और उन तमाम महिलाओं का उत्सव मनाता है जो मुश्किल हालात में भी पीछे हटने से इनकार करती हैं।

नए टीवी शो 'द 50' शो में क्या कुछ खास

चर्चित रियलिटी शो 'द 50' का एक नया प्रोमो जारी किया गया है। इसमें इस आलीशान घर का कोना-कोना दिखाया गया है, जहां पर शो के 50 कंटेस्टेंट्स आकर रहेंगे। इसमें कायदे-कानून भी बताए गए हैं। साथ ही ये भी खुलासा किया गया है कि अहम भूमिका लायन की ही रहेगी। 'द 50' के नए प्रोमो की शुरुआत आलीशान महल से होती है, जो बेहद कलरफुल है और काफी एंटीक चीजों से सजाया गया है। इंटीरियर काफी लुभाने वाला है। बैकग्राउंड में लायन की आवाज आती है, 'यहां का बस एक ही नियम होगा कि यहां कोई नियम नहीं होगा।' इस शो के दो रंग होंगे- एक ड्रामा और एक हंगामा। साथ ही एक कोर्टयार्ड होगा, जहां पर टास्क होगा, और वहां तय होगा कि कौन रहेगा और कौन बाहर जाएगा।

बिग बॉस की तरह, इस शो में लायन कंटेस्टेंट्स को कंट्रोल करेगा। और सभी पर नजर रखेगा। इसके अलावा, लायन की एक ष्ठद्गठ्ठ (गुफा) भी होगा, जहां कंटेस्टेंट्स के बीच फेस-ऑफ होगा और उससे गेम में नया आयाम जुड़ेगा। हालांकि इसका होस्ट फराह खान हैं या फिर अजय देवगन, इस पर अभी भी संशय बना हुआ है। शो के कंटेस्टेंट्स की बात करें तो अभी तक जिनके नाम सामने आए हैं, उसमें रिद्धि डोगरा, उर्वशी ढोलकिया, शाइनी दोशी, दुष्यंत कुकरेजा, मोनालिसा और विक्रांत, दिव्या अग्रवाल, फैसल शेख, करण पटेल शामिल हैं। इनके असावा कंटेंट क्रिएटर दुष्यंत कुकरेजा, अभिनेता-मॉडल रुद्र राणा, सेलिब्रिटी इंटरव्यूअर अहमद अल मरजूकी की भी चर्चा है। ये 1 फरवरी से जियो हॉटस्टार पर रात 9 बजे और कलर्स टीवी पर रात 10:30 बजे प्रसारित किया जाएगा।

'होमबाउंड' ऑस्कर की दौड़ से बाहर आई

करण जौहर की फिल्म 'होमबाउंड' ऑस्कर अवॉर्ड में शॉर्टलिस्ट हुई थी। 22 जनवरी को ऑस्कर के नॉमिनेशन हुए, लेकिन होमबाउंड इन नॉमिनेशन में जगह नहीं बना पाई। 'होमबाउंड' ऑस्कर की रेस से बाहर हो गई। फिल्म के प्रोड्यूसर करण जौहर और एक्टर विशाल जेठवा ने इसे लेकर प्रतिक्रिया व्यक्त की। करण ने लिखा 'गर्व. लव यू नीरज घायवान इस जर्नी का हिस्सा बनाने के लिए।' करण की इस पोस्ट पर नीरज ने भी रिएक्ट किया। उन्होंने लिखा 'थैंक्यू करण जौहर, आप बहुत मजबूत सहारा रहे। आपके बिना यहां तक नहीं पहुंच सकते थे।'

'होमबाउंड' बेस्ट इंटरनेशनल फीचर फिल्म कैटेगरी में शॉर्टलिस्ट हुई थी। अब इस कैटेगरी में ब्राजील की द सीक्रेट एजेंट, फ्रांस की इट वॉज जस्ट एन एक्सीडेंट, नॉर्वे की सेंटीमेंट वैल्यू, स्पेन की 'सिरात' और ट्यूनीशिया की 'द वॉइस ऑफ हिंद रजब' नॉमिनेट हुई हैं। विशाल जेठवा ने कहा कि भले ही होमबाउंड नॉमिनेशन में न पहुंची हो। लेकिन, ये शॉर्टलिस्ट हुई, ये ही अपने आप में सम्मान की बात है। 'होमबाउंड' का यहां तक आना और ग्लोबली इंडिया को रिप्रजेंट करना अपने आप में स्पेशल है। मैं बहुत आभारी हूं इस फिल्म का हिस्सा बनकर। फिल्म को नीरज घायवान ने डायरेक्ट किया है। करण जौहर ने फिल्म को प्रोड्यूस किया। फिल्म में ईशान खट्टर, विशाल जेठवा और जाह्नवी कपूर लीड रोल में थे।

बॉलीवुड वो जगह जहां संविधान पाता है सम्मान

अशोक जोशी

भारतीय संविधान संभवतया विश्व का एकमात्र संविधान है जिस पर जब जो चाहे उंगली उठा सकता है। अभी तक तो राजनेता संविधान की प्रतियां लहरा लहरा कर इसे संकट में बता रहे थे। लेकिन, अब चंद फिल्मकारों ने भी अपनी घटती मांग को लेकर

संविधान की मूल भावना को कटघरे में खड़ा कर दिया है। हाल ही में संगीतकार एआर रहमान ने कहा कि उन्हें काम न मिलने का कारण सांप्रदायिक है। ये पहली बार नहीं हुआ, पहले भी कुछ अभिनेता ऐसे आरोप लगा चुके हैं। लेकिन, इस बात का जवाब भी बॉलीवुड में ही मौजूद है।

हाल ही में ऑस्कर अवार्ड से सम्मानित संगीतकार एआर रहमान ने यह कहकर संविधान में समानता की मूल भावना पर प्रश्नचिन्ह लगाने का प्रयास किया है कि साम्प्रदायिकता वैमनस्यता के चलते उन्हें बॉलीवुड में काम मिलना कम हो गया है। ऐसे में सवाल पैदा होता है कि ऐसा कहकर वह किसे कटघरे में खड़ा करना चाहते हैं। देखा जाए तो बॉलीवुड आज भी वही है और एआर रहमान भी वही। जिस समय रहमान को बॉलीवुड में धड़ाधड़ काम मिल रहा था तब भी बॉलीवुड वही था और आज जब उन्हें बॉलीवुड में उनके अनुसार काम के लाले पडे है, तब भी बॉलीवुड वही है। बदली है तो सिर्फ सरकारें। तो क्या इसका अर्थ यह लगाया जाए कि एआर रहमान अप्रत्यक्ष रूप से सरकार को कटघरे में खडा कर यह कहना चाह रहे है कि सरकार की वजह से उन्हें बॉलीवुड में काम नहीं मिल रहा !

ऐसा नहीं है कि इन दिनो केवल एआर रहमान को ही बॉलीवुड ने अछूत घोषित किया और उन्हें काम से वंचित किया जा रहा है। यदि उनका मानना है कि उनके मुसलमान होने के कारण उन्हें बॉलीवुड में काम नहीं मिल रहा है, तो आनंद मिलिंद, जतीन ललित, अभिजीत, कुमार शानू, शान और सोनू निगम जिन्हें भी काम नहीं मिल रहा है वह किस पर आरोप लगाएं ! इनमें सोनू निगम तो घोर हिन्दूवादी हैं और अजान से निकलने वाली आवाज के खिलाफ आवाज उठा चुके है। इस लिहाज से तो उन्हें हर दूसरी फिल्म में गीत गाने का मौका दिया जाना चाहिए था। लेकिन, स्थिति ऐसी नहीं है। आज देश और महाराष्ट्र में हिंदू समर्थक सरकारें हैं। इसके बावजूद सोनू तक को काम के लाले पड़ रहे हैं। ऐसे में रहमान का यह आरोप लगाना कि साम्प्रदायिकता वैमनस्य के चलते उन्हे का नहीं मिल रहा है गले नहीं उतरता है।

ऐसा भी नहीं है कि एआर रहमान का संगीत जिन दिनों बॉलीवुड में परवान चढ़ रहा था और उनकी झोली ऑफरों से लबालब हो रही थी तब बॉलीवुड में हिन्दू विरोधी या मुस्लिम परस्त लॉबी सक्रिय थी। उनकी सफलतम फिल्में चाहे वह 'बाम्बे' हो चाहे 'ताल' उनके निर्माता कोई मुस्लिम नहीं बल्कि हिन्दू थे। उन्हें जिस गीत 'जय हो' के लिए ऑस्कर मिला उसमे केवल संगीतकार के नाम पर केवल वही मुस्लिम थे। उनको छोड़कर चाहे वह गीतकार गुलजार हो चाहे गायक सुखविंदर सिंह हो सभी हिंदू थे। मजे की बात तो यह है कि 'जय हो' को तैयार करने के लिए संगीतकार एआर रहमान ने सिर्फ तीन वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया था। दुनिया का दस्तूर है कि जब सफलता का सूरज सिर पर होता है तो इंसान इसके लिए अपनी पीठ थपथपाता है लेकिन जब सफलता का सूर्यास्त होने लगता है वह इसके लिए दूसरां को जिम्मेदार ठहराने लगता है।

मुस्लिम कलाकारों के बीच यह एक फैशन सी बन गई है कि वह अपनी असफलता के लिए साम्प्रदायिकता को सामने खडा कर विवाद की स्थिति बना देते है। ऐसा नहीं है कि इस रवायत का श्रीगणेश रहमान ने ही किया है। उनके पहले जॉनी वॉकर और महमूद भी इस तरह के आरोप लगा चुके है कि साम्प्रदायिकता के चलते उन्हें हाशिए पर डाला गया है। क्रिकेट में पूर्व कप्तान अजहरुद्दीन भी इस तरह का आरोप लगा चुके है। फिल्मी जगत पर इस तरह का आरोप लगाने वाले शायद यह भूल जाते हैं कि जिस देश में 80% हिन्दू है वहां यदि कोई मुस्लिम फिल्मकार चाहे वह अभिनेता, अभिनेत्री या गायक, गीतकार या संगीतकार सफल है तो उसके लिए वह 80% दर्शक ही जिम्मेदार हैं जिन्हें देखने वाले दर्शक हिन्दू धर्म को मानते हैं।

अपनी बेरोजगारी पर साम्प्रदायिकता का मुलम्मा चढ़ाने वाले रहमान यह क्यों भूल जाते हैं कि इसी तथाकथित साम्प्रदायिक वैमनस्य के माहौल में बॉलीवुड में सलमान खान, आमिर खान, और शाहरुख खान जैसी त्रिमूर्ति सफलता के सातवें आसमान पर हैं। जिस माहौल को अपनी बेरोजगारी के लिए रहमान जिम्मेदार ठहरा रहे हैं यह तीनों खान भी तो उसी माहौल

में काम कर रहे हैं। जब उनके लिए यह स्थिति निर्मित नहीं हुई तो केवल रहमान के लिए साम्प्रदायिकता ने ऐसी स्थिति क्यों निर्मित की ! हकीकत तो यह है कि यदि देश में कहीं संविधान और समानता को सम्मान हासिल है तो वह फिल्मीस्तान ही है जहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है और फिल्म निर्माण में सभी धर्म सभी वर्ग के फिल्मकार योगदान देते है। जो लोग फिल्मी जगत में साम्प्रदायिकता का आरोप लगाते हैं उन्हें मुगले आजम, अनारकली, मेरे महबूब, मेरे हुजूर, ताजमहल, निकाह, चौदहवी का चाँद जैसी फिल्मों की सफलता पर गौर करना चाहिए। यह सभी फिल्मे मुस्लिम पृष्ठभूमि पर थी। यदि यहां साम्प्रदायिक वैमनस्य का माहौल होता तो यह फिल्में कभी सफल ही नहीं होती।

यदि फिल्मिस्तान में साम्प्रदायिकता का माहौल होता तो यहां कभी हिन्दू कलाकार गुलजार, अनजान, कमर जलालाबादी जैसा नाम नहीं रखते और न ही युसूफ खान को दिलीप और महजबीं को मीना कुमारी का नाम नहीं मिलता । यदि यहां साम्प्रदायिकता का माहौल होता तो यहां कभी भी मधुबाला, मुमताज, नर्गिस जैसी अभिनेत्रियों का चोटी पर पहुंचने का मौका ही नहीं मिलता। जो फिल्मी दुनिया में साम्प्रदायिकता का रोना रोते हैं उनके मगरमच्छ जैसे आंसुओं को पोंछने के लिए केवल ही फिल्म शोले का उदाहरण ही पर्याप्त होगा जिसके निर्माता जी कांपी सिप्पी और निर्देशक रमेश सिप्पी पंजाबी हैं। तो लेखक द्वय सलीम-जावेद मुसलमान। फिल्म के एक नायक धर्मेन्द्र पंजाबी थे तो दूसरे नायक अमिताभ बच्चन उत्तर भारत के शुद्ध हिन्दी भाषी कायस्थ।

फिल्म में ठाकुर की जबरदस्त भूमिका करने वाले संजीव कुमार गुजराती थे, तो गब्बर अमजद खान मुस्लिम पठान। फिल्म की पहली नायिका हेमा मालिनी मद्रासी है, तो जया भादुड़ी ममता बनर्जी की तरह बंगाली है। फिल्म में असरानी और मैकमोहन सिंधी थे तो जगदीप मुसलमान, सचिन पिलगांवकर महाराष्ट्र का मराठी भाषी है तो मौसी लीला मिश्रा ठेठ ब्रजभाषी हैं। विजू खोटे मराठी, एके हंगल सिन्धी, सत्येन कप्पू

पंजाबी हैं। जलाल आगा उर्दू भाषी है तो हेलेन बर्मा से भारत आयी प्रवासी हैं।

फिल्म के गीत पंजाबी आनंद बक्षी ने लिखे हैं तो उन्हें संगीत में पिरोने वाले राहुल देव बर्मन बंगाली थे जो मूलतः त्रिपुरा से आए थे। गानों को आवाज देने वाले किशोर बांग्ला भाषी है तो लता मंगेशकर मराठी और मन्ना डे बांग्ला भाषी। फिल्म के कैमरामैन द्वारका दिवेचा गुजरात के कोली परिवार से आते है जिन्हें ओबीसी का दर्जा मिला है। फिल्म के पात्रों में कोई ब्राह्मण है, तो कोई मुस्लिम कोई पंजाबी है तो कोई ईसाई। एक तरह से देखा जाए तो 'शोले' हिंदी फिल्म होते हुए देश के सभी जाति और धर्म के बीच अनेकता में एकता का संदेश देती है। देश के संविधान का सम्मान करते हुए साम्प्रदायिकता का राग अलापने वालों को जोरदार तमाचा ही है।

परिशिष्ट संयोजन – राजेश शर्मा, ब्यूरो चीफ, सुबह सवेरे, धार, मोबाइल – 9770667516